पैगंबर (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) की वसीयतें

डॉ. मुह़म्मद बक्र इस्माईल

दुसरा भाग

61-90

Rasoulallah.net

LiseOnSunnah Rasoulallah RasoulAllahnet RasusoulAllah_net

रोज़ा एक ढाल है।

عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ - قَال: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ اللَّهُ عَز وجل:"كُلُّ عَمَلِ ابْنِ آدَمَ لَهُ إِلَّا الصِّيَامَ فَإِنَّهُ لِي وَأَنَا أَجْزِي بِه." وَالصِّيَامُ جُنَّةٌ، فَإِذَا كَانَ يَوْمُ صَوْمِ أَحَدِكُمْ فَلَا يَرْفُثْ يَومئذ وَلَا يَصْخَبْ، فَإِنْ سَابَّهُ أَحَدٌ أَوْ قَاتَلَهُ فَلْيَقُلْ: إِنِّي امْرُؤٌ صَائِمٌ، وَالَّذِي نَفْسُ مُحَمَّدٍ بِيَدِهِ لَخُلُوفُ فَمِ الصَّائِمِ أَطْيَبُ عِنْدَ اللَّهِ يوم القيامة مِنْ رِيحِ

तर्जुमा: ह़ज़रत अबू हुरैरह रद़ियल्लाहु अ़न्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: " अल्लाह इरशाद फ़रमाता है: इंसान का हर नेक काम खुद उसी के लिए है सिवाय रोज़े के। क्योंकि वह (खास) मेरे लिए है और मैं ही उसका बदला दूंगा।"

रोज़ा एक ढाल है।

और रोज़ा (गुनाहों और जहन्नुम से बचने के लिए) एक ढाल है। अगर कोई रोज़े से हो तो उसे बुरी बात ना करनी चाहिए और ना ही शोर मचाना चाहिए। अगर कोई उसको गाली दे या उससे लड़ना चाहे उस तो उसका जवाब सिर्फ यह हो कि मैं रोज़ेदार हूँ। उस (अल्लाह) की क़सम जिसके दस्ते कुदरत में मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की जान है! रोज़ेदार के मुंह की बू अल्लाह के नज़दीक मुश्क (कस्तुरी) की खुशबू से भी ज़्यादा अच्छी है। और रोज़ेदार को दो खुशियाँ हासिल हैं: (एक) जब वह रोज़ा खोलता है। और (दूसरी) जब वह अपने अल्लाह से मिलेगा तो वह अपने रोज़े का सवाब पाकर खुश होगा। "

यह हदीस कुद्सी है जिसे नबी ए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने अल्लाह से बयान किया है। इस तरह की ह़दीस़ पाक में एक अलग तरह की महानता ज़ाहिर होती है कि जब मोमिन इस तरह की ह़दीस़ पाक को सुनता है और उसे यह पता चलता है कि यह एक ऐसी ह़दीस़ है कि जिसे अल्लाह के रसूल सल्ला वसल्लम ने अपने अल्लाह की तरफ मन्सूब किया है तो वह अपने दिल में उसकी महानता को महसूस करता है। तथा इस तरह की निस्बित से ह़दीस़ पाक और भी मज़बूत हो जाती है और उसकी शान बढ़ जाती है जैसा कि उसका दिल और भावनाओं पर बहुत गहरा असर पड़ता है।

रोज़ा एक ढाल है।

अल्लाह ने रोज़े को अपने लिये बताया। अतः उसने इरशाद फ़रमाया: " इंसान का हर (नेक) काम (खुद) उस के लिए है सिवाय रोज़े के। क्योंकि वह (खास) मेरे लिए है और मैं ही उसका बदला दूंगा। "

इस तरह के अंदाज़ से हमें रोज़े की महानता का पता चलता है। लेकिन इस अंदाज़ से यहाँ पर एक सवाल उठता है जिसका जवाब देना यहाँ ज़रूरी है और वह सवाल यह है कि अल्लाह ने रोज़े को अपने लिये क्यों बताया जबकि इंसान के दूसरे कामों को इंसान के लिए बताया हालांकि रोज़ा भी इंसान ही का काम है। तो ऐसा क्यों किया? और क्या इस ह़दीस़ पाक में उल्लेखित इंसान के काम से मुराद नेकियाँ और बुराइयाँ दोनों हैं या सिर्फ नेकियाँ ही हैं? और रोज़े को अल्लाह ने अपने लिए बताया तो इसका क्या फायदा है? और अल्लाह के कहने: " और मैं ही इसका बदला दूंगा।" का क्या मतलब है? क्योंकि हर काम का बदला अल्लाह ही देता है। और इनके अलावा भी बहुत से सवाल हैं जो इस इस ह़दीस़ पाक से एक मुसलमान के दिमाग में उठते हैं। लिहाज़ा ध्यान और विचार पर आधारित इन भिन्न प्रकार के प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में निम्नलिखित हैं:

(1) ह़दीस़ पाक में इंसान के काम से मुराद सिर्फ नेकियाँ हैं। क्योंकि उनसे रोज़े को अलग किया गया है। और रोज़ा एक नेक काम है।

रोज़ा एक ढाल है।

(2) रोज़े का अल्लाह के लिए होने का मतलब यह है कि वह अल्लाह के यहाँ लिखा जाता है और उसका सवाब जितना गुना अल्लाह चाहेगा है उसे देगा है जैसा कि हिज़रत अबू हुरैरा से उल्लेखित सहीह़ मुस्लिम की एक ह़दीस़ पाक में इसकी स्पष्टता मौजूद है कि निबी ए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि विसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: " इंसान की हर नेकी दस गुना से सत्तर गुना तक बढ़ा दी जाती है। अल्लाह तआ़ला इरशाद फ़रमाता है:" सिवाय रोज़े के। क्योंकि वह मेरे लिए है और मैं ही उसका बदला दूंगा। (इसलिए कि) आदमी अपनी ख़्वाहिश और खाना मेरे लिए छोड़ देता है।"

(3) रोज़े की निस्बित अल्लाह ने अपनी तरफ की, कुछ उ़लमा फरमाते हैं कि इसकी वजह यह है कि क्योंकि रोज़ा एक काम है जिसमें दिखावा नहीं होता बखिलाफ दूसरे कामों के। अतः बंदा इबादत की नियत से सच्चाई और ईमानदारी के साथ अल्लाह के लिए सुबह से लेकर शाम सूरज डूबने तक खाने-पीने और संभोग (पत्नी के जिमाअ यानी योन सेक्स) करने को छोड़ देता है हालांकि तनहाई और अकेले में अगर वह चाहे तो खा-पी सकता है जैसा कि वह संभोग करके अपनी ख़्वाहिश भी पूरी कर सकता है। लेकिन आमतौर पर कोई भी बंदा ऐसा नहीं करता है। जिससे पता चलता है कि उसका रोज़ा दिखावे के लिए नहीं होता बल्कि केवल अल्लाह के लिए होता है।

रोज़ा एक ढाल है।

और अल्लाह ताआ़ला के फरमान: " और मैं ही इसका बदला दूंगा।" से रोज़े के सवाब की अधिकता और ज़्यादती तरफ इशारा है। क्योंकि उसके सवाब की ज़िम्मेदारी खुद अल्लाह ने अपने उपर ली है।

लिहाज़ा इस हदीस पाक में उल्लेखित अंदाज़ो से पता चलता है कि अगर रोज़ा सच्चाई और ईमानदारी के साथ रखा जाए और उसमें तमाम छोटे-बड़े गुनाहों से बचा जाए तो वह सबसे बेहतर इ़बादत है।

फिर उसके बाद नबी ए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: "रोज़ा एक ढाल है।" यानी रोज़ा रोज़ेदार को गुनाहों और शारीरिक और मानसिक बीमारियों से बचाता है।

बचाव का रास्ता

عَنْ عُقْبَةَ بْنِ عَامِرٍ رضي الله عنه قَالَ: قُلْتُ يَا رَسُولَ اللَّهِ! مَا النَّجَاةُ؟
قَالَ: " أَمْسِكْ عَلَيْكَ لِسَانَكَ وَلْيَسَعْكَ بَيْتُكَ وَابْكِ عَلَى خَطِيئَتِكَ

तर्जुमा: ह़ज़रत उ़क़बा बनि आ़मरि रद़ियल्लाहु अ़न्हु कहते हैं कि मैंने नबी ए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से पूछा: "ए अल्लाह के रसूल! (जहन्नुम से) बचने का क्या तरीक़ा है?" तो आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: "अपनी ज़ुबान क़ाबू में रखो, अपने घर की चौड़ाई में रहो और अपनी गलती पर रोओ।"

बचाव का रास्ता

नबी ए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसिल्लम के सहाबा जो आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसिल्लम से नसीहतें सुनते थे उनकी वजह से उनके दलिों में बहुत ज़्यादा अल्लाह के अ़ज़ाब का डर बैठ गया था यहाँ तक कि कुछ को तो लगता था कि जिहन्नुम की आग उनके सामने ही है और वे उसे अपनी आंखों से भड़कते हुए देख रहे हैं जैसे कि बहुत ज़्यादा गुनाहों और अल्लाह की आज्ञा का पालन करने में कोताही की वजह से उन्हें उस की तरफ ले जाया जा रहा हो।

इसी वजह से वे लोग अल्लाह के आ़ज़ाब से बचने के तरीकों के बारे में पूछते थे और आखरित से पहले दुनिया ही में वे यह सोचते थे कि इससे बचने की कौन सी जगह और क्या तरीक़ा है हालांकि वे यह भी पूरे तौर पर जानते थे कि अल्लाह के अलावा कोई पनाह की जगह नहीं है और उसकी माफी ही उसके गुस्से और आ़ज़ाब से बचने का ज़रिया है।

नबी ए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसिल्लम की ऊपर बयान की हुई वसीयत से हमें तीन चीज़ें हासलि होती हैं।

बचाव का रास्ता

(1) पहली चीज यह है कि सबसे पहला काम जो मुसलमान (बल्कि हर इंसान) को करना चाहिए वह यह है कि वो झूठ, गीबत, चुगली, तोहमत और गाली गलौच जैसी बुरी बातों से अपनी ज़ुबान को रोके।

(2) और दूसरी चीज यह है कि ज़ुबान देखिने में तो बहुत छोटी सी है लेकिन सबसे ज़्यादा गुनाह इसी से होते हैं। इसीलिए जब तक कोई इसे काबू में नहीं रखेगा और सोच समझ कर नहीं बोलेगा उस समय तक यह गलती करने से बाज नहीं आएगी।

(3) तीसरी चीज यह है कि ज़ुबान की सुरक्षा व हफिज़त एक ऐसी चीज़ जिसे केवल मुसलमान ही कर सकता है। क्योंकि सच्चा मुसलमान हमेशा अपनी ज़ुबान को अपने क़ाबू में रखता है और बिना सोचे समझे कोई बात नहीं करता है।

अपने ऊपर सख्ती मत करो वरना तुम पर सख्ती कर दी जाएगी।

عَنْ أَنَس بْن مَالِك – رضي الله عنه – قَالَ: إِنَّ رَسُولَ اللَّه صَلَّى اللَّهُ عَلَيْه وَسَلَّمَ كَانَ يَقُولُ: "لَا تُشَدِّدُوا عَلَى أَنْفُسِكُمْ فَيُشَدَّدَ عَلَيْكُمْ فَإِنَّ قَوْمًا شَدَّدُوا عَلَى أَنْفُسِهِمْ فَشَدَّدَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ فَتِلْكَ بَقَايَاهُمْ فِي الصَّوَامِعِ وَالدِّيَارِ وَرَهْبَانِيَّةً ابْتَدَعُوهَا مَا كَتَبْنَاهَا عَلَيْهِمْ

तर्जुमाः हज़रत अबू हुरैरा रद़ीयल्लाहु अन्हु से उल्लेख है वह कहते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फरमाया करते थे:

अपने ऊपर सख्ती मत करो वरना तुम पर सख्ती कर दी जाएगी।

"अपने ऊपर सख्ती मत करो वरना तुम पर सख्ती कर दी जाएगी, एक कोम के लोगों ने अपनी जानों पर सख्ती की तो अल्लाह ने उन पर भी सख्ती कर दी, अतः गरिजा घरों के अंदर उन्हीं के बचे हुए लोग हैं, (ये वे लोग हैं जनि के बारे में अल्लाह ने फ़रमाया कि) उन लोगों ने खुद ही रहबानयित (संन्यास यानी दुनयिा की चीज़ों से दूरी) अपने ऊपर लाज़मी कर ली थी और हमने उन पर लाज़मि नहीं की थी। "

यक़ीनन दीन में सख्ती उसमें गफलत व कोताही करने से ज़्यादा खतरनाक है या यह कहिए कि दोनों बराबर ही है। क्योंकि ज़्यादती व सख्ती और कमी व कोताही दोनों ही इस्लामी संतुलन (वसतयित व मध्यमार्ग) के खलिाफ हैं जसिका मतलब हर मामले में संतुलन से काम लेना।

गैर जरूरी सख्ती करना बनिा वजह ज़ुल्म व सतिम करना और इस्लामी गुणों और वशिषताओं को खत्म करना है जनिमें आसानी करना, मशक्कत और परेशानी को दूर करना, और कम जम्मिदारयिाँ देना भी हैं।

अपने ऊपर सख्ती मत करो वरना तुम पर सख्ती कर दी जाएगी।

लोगों पर सख्ती करना उन पर ज़ुल्म व सितम और उनके साथ नाइंसाफी करना है। जैसा कि इसमें इंसाफ के उस तराज़ू के खिलाफ़ वर्ज़ी है जिसे इस्लाम ने अपने हर क़ानून में अपनाया है।

सख्ती कई प्रकार से हो सकती है। लेकिन दो निम्नलिखित प्रकार में उनका घेराव किया जा सकता है।

(1) ज़्यादा इबादत करने के मकसद से दिन में सख्ती व ज़्यादती करना। क्योंकि इस तरह की ज़्यादती बहुत बुरी चीज़ है और एक बिदअ़त यानी दीन में नई चीज़ है जिसे आमतौर पर सभी आसमानी शरीअ़तों और खासतौर पर शरिअ़ते मोहम्मदिया ने नापसंद किया है।

(2) वह मनगढ़ंत सख्ती जो इस्लाम के बिलकुल खिलाफ हो और जो दोस्तों और मिलने वालों में जुदाई का सबब हो।

जहन्नुम की आग से बचो भले ही खजूर के एक टुकड़े ही के जरिए।

عَنْ عَدِيٍّ بْنِ حَاتِمٍ أَنَّ رَسُولَ اللَّه صَلَّى اللَّهُ عَلَيْه وَسَلَّمَ ذَكَرَ النَّارَ فَتَعَوَّذَ مِنْهَا، وَأَشَاحَ بِوَجْهِهِ ثَلَاثَ مِرَارٍ، ثُمَّ قَالَ "اتَّقُوا النَّارَ وَلَوْ بِشِقِّ تَمْرَةٍ، فَإِنْ لَمْ تَجِدُوا فَبِكَلِمَةٍ طَيِّبَةٍ

तर्जुमा: ह़ज़रत अ़दी बिन ह़ातिम से उल्लेख है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि ने जहन्नुम का ज़िक्र किया तो उससे पनाह मांगी और चेहरा से नापसंदगी का इज़हार किया, वह कहते हैं कि ऐसा तीन बार किया, फिर आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फरमाया: "जहन्नुम की आग से बचो भले ही खजूर के एक टुकड़े ही (के सदक़ा देने) के जरिए हो और अगर यह भी नहीं कर सकते तो अच्छी बात करके ही (बचो)।"

जहन्नुम की आग से बचो भले ही खजूर के एक टुकड़े ही के जरिए।

नबी ए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम अपने सह़ाबा ए करिाम रद़यिल्लाहु अ़न्हुम को नसीहत करते और उन्हें तमाम कामों के अंजाम की खबर देते रहते जैसा कि उन्हें जन्नत का शोक़ दलिाते और जहन्नम से डराते रहते थे। और यह उस वक्त करते जब सह़बा अपने और दुनयिा के कामों से खाली होतो। कभी-कभार तो आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की नसीहत सुनकर सहाबा रद़यिल्लाहु अ़न्हुम अल्लाह के खौफ व डर से रो पड़ते और आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम भी उनके साथ रोते, क्योंकि आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के दलि में सबसे ज़्यादा अल्लाह का खौफ व डर था। कभी-कभार तो कुछ सह़ाबा को आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की नसीहत सुनते समय ऐसा लगता था कि यह आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की जिंदगी की आखरी नसीहत है।

अतः एक दनि नबी ए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने जहन्नुम की आग का ज़िक्रि कयिा तो आपने उससे पनाह मांगी हालांकि आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम उसकी बुराई से महफूज़ हैं। ज़रा सोचिए कि हमारा क्या हाल होगा जबकि हमें चारों तरफ से गुनाहों ने गहरे गहरे रखा है और हमारे पास नेकियाँ भी नहीं है जो हमें उसकी तपिश और सख़्ती से बचा सकें।

जहन्नुम की आग से बचो भले ही खजूर के एक टुकड़े ही के जरिए।

ह़दीस़ शरीफ के आखरि‍ी हि‍स्‍से का मतलब यह है कि अगर तुम से कंजूसी - जोके जहन्‍नुम में ले जाने वाली है- या कि‍सी और वजह से यह भी ना हो सके कि तुम खजूर का टुकड़ा भी कि‍सी को देखकर अपने आप को जहन्‍नुम की आग से बचा सको तो अच्‍छी बात करके ही अपने आप को जहन्‍नुम की आग से बचा लो, क्‍योंकि अच्‍छी बात भी तुम्‍हें अल्‍लाह से नजदीक करने और उसके अ़ज़ाब से बचाने का जरि‍या है। अतः अल्‍लाह तआ़ला ने कुरान ए मजीद में इरशाद फरमाया:

قَوْلٌ مَّعْرُوْفٌ وَّمَغْفِرَةٌ خَيْرٌ مِّنْ صَدَقَةٍ يَّتْبَعُهَآ اَذًى وَاللّٰهُ غَنِيٌّ حَلِيْمٌ

तर्जामा: अच्‍छी बात कहना और माफ करना उस है खैरात से बेहतर है जि‍सके बाद सताना हो और अल्‍लाह बे नि‍याज़ बर्दाश्‍त करने वाला है।

जितना (अल्लाह की राह में) खर्च कर सको करो और सैंत कर मत रखो वरना अल्लाह पाक भी तुम्हारे लिए अपने खजाने में रोक लगा देगा।

عَنْ أَسْمَاءَ بِنْتِ أَبِي بَكْرٍ - رضي الله عنها- أَنَّهَا جَاءَتْ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَتْ: يَا نَبِيَّ اللَّهِ، لَيْسَ لِي شَيْءٌ إِلَّا مَا أَدْخَلَ عَلَيَّ الزُّبَيْرُ، فَهَلْ عَلَيَّ جُنَاحٌ أَنْ أَرْضَخَ مِمَّا يُدْخِلُ عَلَيَّ؟ فَقَالَ: "ارْضَخِي مَا اسْتَطَعْتِ وَلَا تُوعِي فَيُوعِيَ اللَّهُ عَلَيْكِ

ह़ज़रत अबू बक्र स़दि्दीक़ रद़यिल्लाहु अ़न्हु की बेटी आसमा रद़यिल्लाहु अ़न्हा अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि विसल्लम के पास आई और बोलीं: ए अल्लाह के रसूल! मेरे पास कुछ नहीं है सिवाय उसके जो ज़ुबैर मुझे देते हैं। तो अगर मैं इसमें से कुछ सदक़ा करूं तो क्या मुझ पर कोई गुनाह होगा? तो आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया:

जितना (अल्लाह की राह में) खर्च कर सको करो और सैंत कर मत रखो
वरना अल्लाह पाक भी तुम्हारे लिए अपने ख़ज़ाने में रोक लगा देगा।

"जितना (अल्लाह की राह में) खर्च कर सको करो और सैंत कर मत रखो वरना अल्लाह पाक भी तुम्हारे लिए अपने खज़ाने में रोक लगा देगा।"

मक्के की औरतें अपने पतियों से मोहब्बत करने, उनके साथ अच्छा व्यवहार करने, उनके साथ वफादारी करने, उन्हें हमेशा खुश रखने की कोशिश करने और उनकी मौजूदगी और गैरमौजूदगी में उनके माल की हिफाज़त करने के मामले में बहुत ज़्यादा मशहूर थीं। लेकिन जब इस्लाम आया तो उसने उनके इस अच्छे एखलाक़ की खूबसूरती को और भी बढ़ा दिया और उनकी अच्छी फितरत में चार चांद लगा दिए। अतः उसने उन्हें सिखाया की इज़्ज़त व आबरू और माल की कैसे हिफाज़त की जाए। उनके अंदर अच्छी फितरत को उजागर किया। उनके लिए सीमाएं रखीं। और इबादत और खास तौर पर पतियों और आमतौर पर दूसरे लोगों के साथ मामलों और संबंधों के बारे में उन्हें बताया।

हज़रत आसमा विनते अबु बक्र सिद्दीक़ रद़ियल्लाहु अन्हुमा नेक एख़लाक़ और अच्छी सीरत में पहले दर्जे की महिला थीं। वह एक अच्छे और आदर्शवादी पति की एक अच्छी और आदर्शवादी पत्नी थीं।

जितना (अल्लाह की राह में) खर्च कर सको करो और सैंत कर मत रखो वरना अल्लाह पाक भी तुम्हारे लिए अपने खज़ाने में रोक लगा देगा।

वह बहुत सब्र और शुक्र करने वाली थीं। वह रोजी-रोटी में अपने शोहर की मदद करतीं की और तंग दस्ती में सब्र से काम लेती थीं। घर का सारा काम काज आप ही किया करती थीं यहाँ तक कि घोड़े का घास दाना और उसकी मालिश का काम भी आप ही क्या करती थीं बल्कि ऊंट की खुराक के लिए खजूरों की गुठलियाँ भी बहुत दूर बागों में से बीन कर अपने सर पर गठरी बांधकर लाया करतीं और उन्हें कूटकर उसकी खुराक तैयार करती थीं।

ह़दीस़ ए पाक में आने वाले " रद़ह़" शब्द का मतलब है कुछ खाना वगैरह किसी दूसरे को देना।

लिहाज़ा अब ह़दीस़ शरीफ का मतलब यह होगा कि नबी ए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि विसल्लम ने ह़ज़रत आसमा को इतनी थोड़ी चीज देने की इजाज़त दी जिस पर आमतौर पर इंसान ध्यान नहीं देता है और जिसका अगर उनके पति को पता चल जाए तो वह भी उन पर उनकी पकड़ ना करें और ना ही उससे उनकी रोजी-रोटी में कोई नुकसान हो।

जब तुम में से कोई दुआ़ करे तो (अल्लाह से) यक़ीन के साथ मांगे।

عَنْ أَنَس رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّه صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ "إِذَا دَعَا أَحَدُكُمْ فَلْيَعْزِمِ الْمَسْأَلَةَ وَلَا يَقُولَنَّ اللَّهُمَّ إِنْ شِئْتَ فَأَعْطِنِي فَإِنَّهُ لَا مُسْتَكْرِهَ لَهُ

तर्जुमा: ह़ज़रत अनस रद़ियल्लाहु अ़न्हु कहते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि विसल्लम ने इरशाद फरमाया: जब तुम में से कोई दुआ़ करे तो (अल्लाह से) यक़ीन के साथ मांगे और यह ना कहे: ए अल्लाह! अगर तू चाहे तो मुझे देदे, क्योंकि अल्लाह पर कोई ज़बरदस्ती करने वाला नहीं है।"

जब तुम में से कोई दुआ़ करे तो (अल्लाह से) यक़ीन के साथ मांगे।

हर मुसलमान अच्छी तरह से यह जानता है कि सारी मख़लूक़ और चीज़ अल्लाह ताआ़ला की मर्ज़ी और उसकी क़ुदरत के तहत है। उनमें उसी का हुक्म चलता है। वह जो चाहता है होता है और जो नहीं चाहता नहीं होता है। उसके फैसले को कोई रद्द नहीं कर सकता और ना ही उसके हुक्म को कोई टाल सकता है। सभी उसके मोहताज हैं और वह किसी का मोहताज नहीं। लोग अगर उसकी बात मानें तो उसे कुछ फायदा नहीं होता और ना ही उसे उनके बात ना मानने से कुछ नुकसान होता है। लिहाज़ा जब ऐसा मामला है तो बंदे को चाहिए कि वह सुबह व शाम छुपकर और खुलेआम गिड़ गिड़ाकर उसकी बारगाह में दुआ़ करता रहे और उससे उसकी कृपा, दया, रहमत और माफी की भीख मांगता रहे पूरे इस यक़ीन के साथ कि वह अपनी रहमत से मेरी दुआ ज़रूर क़बूल करेगा। क्योंकि अल्लाह ऐसे व्यक्ति की दुआ को रद्द नहीं करता जो उससे गिड़ गिड़ाकर और पूरी ईमानदारी के साथ दुआ़ करें जबकि वह हलाल व जायज़ खाता पीता हो और जायज़ पहनता हो, उसके ईमान में मायूसी और निराशा ना हो और उसकी दुआ़ अदब के खिलाफ तरीके से ना हो और ना ही अपनी दुआ़ यानी मांग में हद से बड़े।

जब तुम में से कोई दुआ करे तो (अल्लाह से) यक़ीन के साथ मांगे।

यह हदीस़ शरीफ मुसलमानों को इस बात की हिदायत देती है कि जब अल्लाह से दुआ करें तो पूरे यक़ीन के साथ करें। और अपने अल्लाह का हुक्म मानने में अपनी तरफ से कोई कोताही करने या कोई गुनाह करने या किसी और वजह से दुआएं करने में हिचकिचाहट या शाक व संदेह से काम न लें। क्योंकि अल्लाह करीम अपने बंदों पर खुद उनसे ज़्यादा मेहरबान व दयालु है और उसकी दया व मेहरबानी और कृपा हर चीज़ को घेरे हुए है।

सोओ भी और नमाज भी पढ़ो, रोजे भी रखो और खाओ पियो भी।

عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرٍو – رضي الله عنهما - : دَخَلَ عَلَيَّ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: "أَلَمْ أُخْبَرْ أَنَّكَ تَقُومُ اللَّيْلَ وَتَصُومُ النَّهَارَ" قُلْتُ بَلَى، قَالَ: "فَلَا تَفْعَلْ، قُمْ وَنَمْ، وَصُمْ وَأَفْطِرْ؛ فَإِنَّ لِجَسَدِكَ عَلَيْكَ حَقًّا، وَإِنَّ لِعَيْنِكَ عَلَيْكَ حَقًّا، وَإِنَّ لِزَوْرِكَ عَلَيْكَ حَقًّا، وَإِنَّ لِزَوْجِكَ عَلَيْكَ حَقًّا، وَإِنَّكَ عَسَى أَنْ يَطُولَ بِكَ عُمُرٌ وَإِنَّ مِنْ حَسْبِكَ أَنْ تَصُومَ مِنْ كُلِّ شَهْرٍ ثَلَاثَةَ أَيَّامٍ؛ فَإِنَّ بِكُلِّ حَسَنَةٍ عَشْرَ أَمْثَالِهَا فَذَلِكَ الدَّهْرُ كُلُّهُ". قَالَ: فَشَدَّدْتُ فَشُدِّدَ عَلَيَّ، فَقُلْتُ: فَإِنِّي أُطِيقُ غَيْرَ ذَلِكَ، قَالَ: "فَصُمْ مِنْ كُلِّ جُمُعَةٍ ثَلَاثَةَ أَيَّامٍ". قَالَ: "فَشَدَّدْتُ فَشُدِّدَ عَلَيَّ، قُلْتُ: إِنِي أُطِيقُ غَيْرَ ذَلِكَ،

قَالَ:"فَصُمْ صَوْمَ نَبِيِّ اللَّهِ دَاوُدَ

قُلْتُ: وَمَا صَوْمُ نَبِيِّ اللَّهِ دَاوُدَ؟

قَالَ:"نِصْفُ الدَّهْرِ

सोओ भी और नमाज भी पढ़ो, रोजे भी रखो और खाओ पियो भी।

तर्जुमा: अब्दुल्लाह बनि अम्र रदयिल्लाहु अन्हुमा कहते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम मेरे पास तशरीफ लाए और फरमाया: क्या मुझे यह खबर नहीं मिली है कि तुम रात में नमाज पढ़ते हो और दिन में रोज़े रखते हो? उन्होंने कहा: क्यों नहीं, जी हाँ ऐसा ही है। नबी ए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: तुम ऐसा हरगिज ना करो, सोओ भी और नमाज भी पढ़ो, रोजे भी रखो और खाओ पियो भी। क्योंकि तुम्हारे बदन का भी तुम पर हक़ है, तुम्हारी आंख का भी तुम पर हक़ है, तुम्हारे मेहमान का भी तुम पर हक़ है, तुम्हारी बीवी का भी तुम पर हक़ है। उम्मीद है कि तुम्हारी उम्र लंबी हो। लिहाज़ा तुम्हारे लिए बस इतना काफी है कि हर महीने में तीन रोज़े रखा करो, क्योंकि एक नेकी का स़वाब दस गुना होता है तो इस तरह से यह जिंदगी भर रोजे रखना जैसा हो जाएगा। हजरत अ़ब्दुल्ला बनि अ़म्र कहते हैं: तो मैंने सख्ती चाही तो मुझ पर सख्ती कर दी गई, मैंने कहा: मैं इससे ज़्यादा की ताकत रखता हूँ। तो नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फरमाया: तो हफ्ते में तीन दिन रोज़े रख लिया करो। हजरत अ़ब्दुल्ला बनि अ़म्र कहते हैं:

सोओ भी और नमाज भी पढ़ो, रोजे भी रखो और खाओ पियो भी।

मैं ने सख्ती चाही तो मुझ पर सख्ती कर दी गई, मैंने कहा मैं इससे ज़्यादा की ताकत रखता हूँ। तो नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि विसल्लम ने फरमाया: तुम अल्लाह के नबी दाऊद अ़लैहस्सिलाम के रोज़ो की तरह रोज़े रख लिया करो। हजरत अ़ब्दुल्ला बिन अ़म्र कहते हैं: मैंने कहा दाऊद अ़लैहस्सिलाम के रोज़े क्या हैं? तो नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि विसल्लम ने फरमाया: एक दिन रोज़ा और एक दिन इफ्तार।"

अत: तमाम मामलों में वसतियत यानी संतुलन और मध्यमार्ग हि इस्लाम का तरीक़ा है। और यह एक ऐसा तरीक़ा है जो हर चीज में संतुलन पर आधारित है। लिहाज़ा इस्लाम के अन्दर न तो किसी चीज़ हद से ज़्यादती है और न ही हद से ज़्यादा कमी। और न ही नुकसान उठाना है और न ही नुकसान पहुंचाना। इंसान पर जिस्म का हक है यह है कि उसे राहत और सुकून दे। संतुलनकारी के मुताबिक उसकी ख्वाहिशें को पूरा करे। बिना ज़्यादती के खाने पीने दे, सख्त गर्मी और सर्दी से उसकी सुरक्षा करे, तबीयत का ख्याल रखे ताकि बीमारियों से बच सके और सही तरीके अपनी जिम्मेदारियों को पूरा कर सके। और हैसियत के मुताबिक अच्छे कपड़े वगैरह भी पहने। क्योंकि अच्छी तरह से रहना औ अच्छे कपड़े पहनना आदमियत यानी मानवता का एक हिस्सा है जिसका हर इज़्ज़तदार आदमी ख्याल रखता है।

सोओ भी और नमाज भी पढ़ो, रोजे भी रखो और खाओ पियो भी।

और उस पर उसकी आंख का हक़ यह है कि उसे सोने दे। नबी ए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि विसल्लम ने आंख को खास तौर पर अलग से ज़िक्र किया बावजूद इसके कि यह भी बदन में शामिल है ताकि आपके फरमान: "सोओ भी और नमाज़ भी पढ़ो।" की अच्छी तरह से ताकीद हो जाए। नींद अल्लाह तआ़ला ने बदन के सुकून के लिए बनाई है। अतः कोई भी इंसान और जानवर इसके बिना नहीं रह सकता। लिहाज़ा नींद एक बहुत बड़ी नेमत है। इबादत सिर्फ़ नमाज़ या रोज़े ही में नहीं है बल्कि हर फायदे मंद हरकत हर लाभदायक काम और मुलाकात और जायज़ खेल कूद में भी इबादत है। अगर इंसान दूसरे लोगों से अलग हो जाए तो अपने रिश्तेदारों, दोस्तों और पड़ोसियों के अधिकार यानी हक़ से संबंधित अपनी जिम्मेदारियाँ कैसे निभाएगा? क्योंकि इन सब के भी उस पर कुछ अधिकार और हक़ हैं। तथा अल्लाह तआ़ला ने अपने बंदों को हुक्म दिया है कि वे आपस में एक दूसरे को जाने और नेकी और परहेज़गारी पर एक दूसरे की मदद करें। अगर इंसान अपनी इबादत की जगह में ही बैठा रहा या दिन में रोज़े रखे और रात में नमाज पढ़े और घर ही में पड़ा रहा है, और किसी से न मीले झुले तो वह अल्लाह के इस हुक्म पर कैसे अमल करेगा।

ज़्यादा हंसना दिल को मुर्दा करता है।

قَالَ النبـيُ صَـلَّى اللَّـهُ عَلَيْـهِ وَسَـلَّمَ: "…. وَلَا تُكْـثِرْ الضَّحِـكَ، فَـإِنَّ كَـثْرَةَ الضَّحِـكِ تُمِيتُ الْقَلْبَ

तर्जुमा:नबी ए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया: "…….और ज़्यादा मत हंसो क्योंकि ज़्यादा हंसना दिल को मुर्दा करता है। "

यह जो ह़दीस़ पाक में आया है कि ज़्यादा हंसना दिल को मुर्दा करता है तजुर्बे से साबित है कि ज़्यादा वही हंसता है जो मानसिक हवस, एख़लाक़ी बिगाड़ और दिल की बीमारी का शिकार होता है कि वह बिना किसी फायदे के अपने दिल से तकलीफ देने वाला दर्द, गम घबराहट और अंधेरे को दूर करने की कोशिश करता है। उसकी मिसाल ऐसे ही जैसे कि अधमरा पक्षी व परिंदा जो है दर्द की तकलीफ से नाच रहा हो।

ज़्यादा हंसना दिल को मुर्दा करता है।

अगर ये गुरुर करने वाले और लापरवाह लोग अपने मरने के बाद के खतरनाक अज़ाब को जान लें तो हरगिज़ि इतना कभी ना हंसें।

रसूल ए करीम सल्लल्लाहु अलैहि विसल्लम ने यह नहीं फ़रमाया कि हिंसना दिलि को मुर्दा करता है बल्कियिह फ़रमाया कि ज़्यादा हंसना दिलि को मुर्दा करता है

लहिाज़ा इंसान को मुनासबि जगह और मुनासबि हालत में कभी-कभी थोड़ा बहुत हंसना भी चाहिए और अक्लमंद व बुद्धिमान व्यक्ति बेहतर जानता है कि कब उसे हंसना चाहिए और कब नहीं।

तुम अपने वारिसों को अपने बाद मालदार छोड़ कर जाओ तो यह उस से बेहतर है कि उन्हें मोहताज छोड़ कर जाओ कि फिर वे लोगों के सामने हाथ फैलाते फिरें।

عَنْ عَنْ سَعْدِ بْنِ أَبِي وَقَّاصٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: جَاءَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَعُودُنِي وَأَنَا بِمَكَّةَ، وَهُوَ يَكْرَهُ أَنْ يَمُوتَ بِالْأَرْضِ الَّتِي هَاجَرَ مِنْهَا.

قَالَ: "يَرْحَمُ اللَّهُ ابْنَ عَفْرَاءَ".

قُلْتُ يَا رَسُولَ اللَّهِ: أُوصِي بِمَالِي كُلِّهِ؟

قَالَ: "لَا".

قُلْتُ: فَالشَّطْرُ.

قَالَ: "لَا".

قُلْتُ: الثُّلُثُ.

قَالَ: "فَالثُّلُثُ، وَالثُّلُثُ كَثِيرٌ؛ إِنَّكَ أَنْ تَدَعَ وَرَثَتَكَ أَغْنِيَاءَ خَيْرٌ مِنْ أَنْ تَدَعَهُمْ عَالَةً يَتَكَفَّفُونَ النَّاسَ فِي أَيْدِيهِمْ، وَإِنَّكَ مَهْمَا أَنْفَقْتَ مِنْ نَفَقَةٍ فَإِنَّهَا صَدَقَةٌ حَتَّى اللُّقْمَةُ الَّتِي تَرْفَعُهَا إِلَى فِي امْرَأَتِكَ، وَعَسَى اللَّهُ أَنْ يَرْفَعَكَ فَيَنْتَفِعَ بِكَ نَاسٌ وَيُضَرَّ بِكَ آخَرُونَ"، وَلَمْ يَكُنْ لَهُ يَوْمَئِذٍ إِلَّا ابْنَةٌ.

तुम अपने वारिसों को अपने बाद मालदार छोड़ कर जाओ तो यह उस से बेहतर है कि उन्हें मोहताज छोड़ कर जाओ कि फिर वे लोगों के सामने हाथ फैलाते फिरें।

तर्जुमा: हज़रत सअद बनि अबी वक़्क़ास ने बयान किया के नबी ए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम (हज्जतुल वदाअ़ में) मेरी खैरियत के लिए तशरीफ लाए। मैं उस समय मक्के हि में था। और नबी ए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम उस जगह पर मौत को पसंद नहीं करते थे जहाँ से कोई हिजरत कर चुका हो। नबी ए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फरमाया अल्लाह इब्ने अ़फरा पर रहमत (कृपा) फरमाए। मैंने कहा: ए अल्लाह के रसूल! मैं अपने सारे माल व दौलत की वसीयत कर दूं?

नबी ए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: नहीं।
मैंने पूछा: फिर आधे की कर दूँ ?

नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: नहीं।
मैंने पूछा: फिर तिहाई की कर दूँ?

नबी ए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: तिहाई की कर सकते हो, और यह भी बहुत है, अगर तुम अपने वारिसों को अपने बाद मालदार छोड़ कर जाओ तो यह उस से बेहतर है कि उन्हें मोहताज छोड़ कर जाओ कि फिर वे लोगों के सामने हाथ फैलाते फिरें। बेशक (नेक दिली से)

तुम अपने वारिसों को अपने बाद मालदार छोड़ कर जाओ तो यह उस से बेहतर है कि उन्हें मोहताज छोड़ कर जाओ कि फिर वे लोगों के सामने हाथ फैलाते फिरें।

जो भी तुम खर्च करते हो वह सब सदक़ा है यहाँ तक कि वह निवाला भी जो तुम अपनी बीवी के मुंह में डालते हो। और मुमकिन है कि अल्लाह तुम्हारी उम्र में बरकत दे और उसके बाद तुम से बहुत से लोगों को फायदा हो और (इस्लाम के दुश्मन) दूसरे बहुत से लोग नुकसान उठाएं। उस समय ह़ज़रत सअ़द रद़ियल्लाहु अ़न्हु की सिर्फ एक ही बेटी थी।

नबी ए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने अपने सभी जवाबों की वजह अपने इस फ़रमान से बयान की कि: "अगर तुम अपने वारिसों को अपने बाद मालदार छोड़ कर जाओ तो यह उस से बेहतर है कि उन्हें मोहताज छोड़ कर जाओ कि फिर वे लोगों के सामने हाथ फैलाते फिरें।" यानी अगर तुम अपने वारिसों को मालदार छोड़ कर जाओ तो यह तुम्हारे लिए भी और उनके लिए भी उससे बेहतर है कि तुम उन्हें गरीब व फकीर छोड़ कर जाओ कि वे दूसरे लोगों से भीख मांगते फिरें तो वे लोग उनके हाथों में थोड़ा बहुत कुछ डाल दें जिससे दुनिया और आखिरत में उनकी ज़िल्लत व रुसवाई हो।

इस ह़दीस़ में जो मालदार आया है उसका मतलब यह है कि उनकी जिंदगी का ज़रूरत भर माल हो ना कि यह कि बहुत ज़्यादा माल हो। तो जिसके पास ज़रूरत भर खाने पीने का सामान और दूसरी ज़रूरी चीज़ें हैं गोया के उसके पास सारी दुनिया है।

तुम अपने वारिसों को अपने बाद मालदार छोड़ कर जाओ तो यह उस से बेहतर है कि उन्हें मोहताज छोड़ कर जाओ कि फिर वे लोगों के सामने हाथ फैलाते फिरें।

हदीस़ पाक में आने वाला शब्द "आ़लह" का मतलब वे लोग हैं जो दूसरों पर बोझ हों यानी दूसरों से अपनी ज़रूरत की चीज़ें और पैसे वगैरह भीख मांगें।
इंसान के ज़िम्मे में जिसका खर्च होता है तो वह उसका अपनी जिंदगी में भी ज़िम्मेदार है और मरने के बाद भी ज़िम्मेदार है जबकि उसके पास इतना माल हो जिससे कि उसके इस दुनिया से जाने के बाद उसकी देखभाल में रहने वाला व्यक्ति या उसका वारिस अपनी ज़िंदगी की ज़रूरत को पूरा कर सके।

इंसान मरने के बाद एक याद बनकर रह जाता है और इंसान की याद उसकी दूसरी जिंदगी है लिहाज़ा इंसान को चाहिए कि वह अपने बाद वालों के लिए कुछ माल वगैरा छोड़कर जाए जिससे वे उसे याद करते रहें।

तथा हमें इस हदीस़ शरीफ से यह सबक़ मिलता है कि इंसान बीमारी के समय वसीयत करने में जल्दी ना करे क्योंकि हो सकता है अल्लाह तआ़ला उसे ठीक कर दे और उसे लंबी ज़िन्दगी दे और फिर वह अपनी दौलत से फायदा उठाए। लिहाज़ा जब तक ज़िंदा रहने और नेक अ़मल करने की उम्मीद बाकी है जब तक वह अपनी सारी या आधी या तिहाई दौलत सदक़ा करने या किसी को देने की वसीयत करने में जल्दी ना करे। और अगर वसीयत करना ज़रूरी ही समझता है तो सिर्फ एक तिहाई के अंदर ही अंदर करे।

वास्तव में सब्र तो मुसीबत के शुरू में ही है।

عَـنْ أَنَـسِ بْـنِ مَالِـك – رضي اللـه عنـه - أَنَّ رَسُـولَ اللَّـه صَـلَّى اللَّـهُ عَلَيْـهِ وَسَـلَّمَ أَتَى
"عَلَى امْرَأَةٍ تَبْكِي عَلَى صَبِيٍّ لَهَا، فَقَالَ لَهَا: "اتَّقِي اللَّهَ وَاصْبِرِي

فَقَالَـتْ: وَمَـا تُبَـالِي بِمُصِيبَتِـي، فَلَـمَّا ذَهَـبَ، قِيـلَ لَهَـا إِنَّـهُ رَسُـولُ اللَّـهِ صَـلَّى اللَّـهُ عَلَيْـهِ
وَسَلَّمَ فَأَخَذَهَا مِثْلُ الْمَوْتِ

.فَأَتَتْ بَابَهُ، فَلَمْ تَجِدْ عَلَى بَابِهِ بَوَّابِينَ، فَقَالَتْ: يَا رَسُولَ اللَّهِ، لَمْ أَعْرِفْكَ
".فَقَالَ: إِنَّمَا الصَّبْرُ عِنْدَ أَوَّلِ صَدْمَةٍ" أَوْ قَالَ: "عِنْدَ أَوَّلِ الصَّدْمَةِ

वास्तव में सब्र तो मुसीबत के शुरू में ही है।

तर्जुमा: हज़रत अनस बिन मालिक रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम एक औरत के पास से गुज़रे जो अपने (मरे हुए) बच्चे पर रो रही थी तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "अल्लाह से डर और सब्र कर।" तो वह औरत कहने लगी: तुम्हें मेरी मुसीबत का क्या अंदाजा है। जब अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम चले गए तो उस औरत से कहा गया कि वह (कहने वाले) अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम थे। यह सुनकर उसे मौत के बराबर सदमा हुआ। वह औरत नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दरवाजे पर आई लेकिन उसे दरवाज़े पर कोई गार्ड नहीं दिखा, कहने लगी: ए अल्लाह के रसूल मैंने आपको पहचाना नहीं था। (मुझे माफ फरमा दें) नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: "वास्तव में सब्र तो मुसीबत के शुरू में ही है।"

सब्र के साथ तक़वा (परहेज़गारी व अल्लाह का डर) ईमान के लिए ऐसे ही है जैसे बदन के लिए आत्मा। तक़वे के मोमिनों के दिलों में बड़े गहरे असर हैं। उनमें सब्र भी उसका एक असर है। बल्कि यह उसका साथी है जो उससे कभी अलग नहीं होता।

वास्तव में सब्र तो मुसीबत के शुरू में ही है।

सब्र यह है कि अल्लाह के फैसले और उसके हुक्म से राज़ी रहते हुए खुले दिल और सुकून के साथ परेशानियों का सामना करे, ना उम्मीदी, मायूसी व निराशा और हर उस चीज़ को छोड़ दे जो मुसीबत पर रोने धोने का सबब हो। और इन चीज़ों पर मदद हासिल करने के लिए खूब ज़्यादा अल्लाह को याद करे, क़ुरआन मजीद पढ़े, रात के अंधेरे में नमाज़ें पढ़े, ईमानदारी के साथ दुआ करे, इन सभी जगहों को छोड़ दे जहाँ तंगदिली और अफसुर्दगी महसूस हो और ऐसी जगहों में जाए जो उसके गम दूर करें और उसे सुकून पहुंचाएं लेकिन शर्त यह है कि वहाँ ह़राम चीज़ों पर नजर ना पड़ती हो और शरीयत के खिलाफ काम ना होते हों।

उ़लमा ए किराम कहते हैं कि सब्र कई तरह का होता है।

(1) इत़ाअ़त (आज्ञापालन या आज्ञाकारिता) पर सब्र करना।

(2) गुनाहों से सब्र करना।

(3) आजमाइश या मुसीबत पर सब्र करना

वास्तव में सब्र तो मुसीबत के शुरू में ही है।

(1) इताअत (आज्ञापालन या आज्ञाकारिता) पर सब्र करने का मतलब यह है कि बिना कोताही और बिना गफलत और सुस्ती के फ़र्ज़ो, सुन्नतों, वाजिबों, मुस्तहबों और नवाफिलों को अदा करना। और अल्लाह की रहमत में उम्मीद रखते हुए और उसके अज़ाब से डरते हुए उसकी रज़ामंदी और खुशी तलाश करना।

(2) गुनाहों से सब्र करना: यह सब्र के पहले प्रकार से कम बेहतर नहीं है और न ही उससे अलग है। क्योंकि इताअत (आज्ञापालन या आज्ञाकारिता) यानी आदेशों का पालन करना और मना की हुई चीज़ों से रुकना है। और इन दोनों के बगैर कोई भी बन्दा फरमांबरदार (आज्ञाकारी) नहीं बन सकता है।

(3) तीसरे प्रकार का सब्र यानी परेशानी और मुसीबत पर सब्र करना तो यह अल्लाह के फैसले और उसकी मर्ज़ी से राज़ी और खुश रहने से पैदा होती है जैसा कि पीछे हमने इसकी तरफ इशारा किया। और यह पहले दोनों प्रकार से मिली हुई है बल्कि उनमें दाखिल है। और याद रहे कि बन्दे को परेशानी के हिसाब से सवाब दिया जाएगा और इख़लास व ईमानदारी के हिसाब से जन्नत में उसके दर्जे बढ़ाए जाएंगे।

वास्तव में सब्र तो मुसीबत के शुरू में ही है।

परेशानी और मुसीबत पर सब्र करने के कई दर्जे हैं उनमें सबसे बड़ा दर्जा यह है कि सब्र मुसीबत के शुरू में हो। क्योंकि जब इंसान को कोई परेशानी और मुसीबत आती है तो उसका संतुलन बदल जाता है, अपने होश-ओ-हवास खो बैठता है और फिर वह सब कुछ कह और कर देता है जो नहीं कहना या करना चाहिए। ऐसे मुसीबत भरे समय में सबसे बेहतर चीज़ है जिसके ज़रिए एक मुसलमान तक़दीर से खुशी का इज़हार कर सकता है वह यह कि वह यह कहे

إنا لله وإنا إليه راجعون

यानी हम सब अल्लाह के माल हैं और हमें उसी की तरफ लौटना है। और जब भी मुसीबत याद आए तो इसे बार-बार दोहराए ताकि उससे उस मुसीबत व परेशानी का बोझ हल्का हो जाए।

खुश हो जाओ और ऐसी चीज़ की उम्मीद करो जो तुम्हें खुश कर देगी।

عَنْ عَمْرِو بْنِ عَوْفٍ الأنصاري – رضي الله عنه - أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بَعَثَ أَبَا عُبَيْدَةَ بْنَ الْجَرَّاحِ – رضي الله عنه - إِلَى الْبَحْرَيْنِ يَأْتِي بِجِزْيَتِهَا، فَقَدِمَ أَبُو عُبَيْدَةَ بِمَالٍ مِنَ الْبَحْرَيْنِ، فَسَمِعَتْ الأَنْصَارُ بِقُدُومِ أَبِي عُبَيْدَةَ، فَوَافَوْا صَلاَةَ الْفَجْرِ مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

فَلَمَّا صَلَّى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، انْصَرَفَ، فَتَعَرَّضُوا لَهُ، فَتَبَسَّمَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حِينَ رَآهُمْ ثُمَّ قَالَ: "أَظُنُّكُمْ سَمِعْتُمْ أَنَّ أَبَا عُبَيْدَةَ قَدِمَ بِشَيْءٍ مِنْ الْبَحْرَيْنِ؟ قَالُوا أَجَلْ يَا رَسُولَ اللَّهِ

فَقَالَ: "أَبْشِرُوا وَأَمِّلُوا مَا يَسُرُّكُمْ، فَوَاللَّهِ مَا الْفَقْرَ أَخْشَى عَلَيْكُمْ، وَلَكِنِّي أَخْشَى عَلَيْكُمْ أَنْ تُبْسَطَ الدُّنْيَا عَلَيْكُمْ كَمَا بُسِطَتْ عَلَى مَنْ كَانَ قَبْلَكُمْ، فَتَنَافَسُوهَا كَمَا تَنَافَسُوهَا؛ فَتُهْلِكَكُمْ كَمَا أَهْلَكَتْهُمْ

ख़ुश हो जाओ और ऐसी चीज़ की उम्मीद करो जो तुम्हें ख़ुश कर देगी।

तर्जुमा: ह़ज़रत अ़म्र बिन औफ़ अंसारी रद़ियल्लाहु अ़न्हु बयान करते हैं कि अल्लाह़ के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने ह़ज़रत अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ को बह़रीन भेजा ताकि वहाँ (के लोगों) का जज़िया (टैक्स) लेकर आएं। ह़ज़रत अबू उ़बैदा बह़रीन से माल लेकर आए। अंसार को जब ह़ज़रत ह़ज़रत अबू उ़बैदा के आने का पता व चला तो उन्होंने फज्र की नमाज़ की नमाज़ मस्जिद-ए-नबवी में अल्लाह़ के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पीछे अदा की। अल्लाह़ के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम जब नमाज़ से फारिग होकर लौटे तो वे लोग आपके सामने आ गए। अल्लाह़ के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम उन्हें देख कर मुस्कुराए और फ़रमाया: "मेरा ख़्याल है कि तुम्हें पता चल गया है कि अबू उ़बैदा बह़रीन से कुछ लाए हैं? उन्होंने कहा: जी हाँ अल्लाह़ के रसूल! तो नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फरमाया: "खुश हो जाओ और ऐसी चीज़ की उम्मीद करो जो तुम्हें खुश कर देगी। खुदा की क़सम मुझे तुम पर गरीबी का अंदेशा नहीं है लेकिन मैं इस बात से डरता हूँ कि कहीं दुनिया तुम पर इसी तरह़ ना फैलादी जाए जैसे कि तुम से पहले के लोगों के लिए फैलादी गई थी तो तुम भी उसी तरह़ उसके लिए दूसरे से मुक़ाबला करने लगो जैसे उन लोगों ने किया तो यह (यानी दुनिया) तुम्हें इसी तरह़ तबाह़ व बर्बाद कर दे जैसे कि उन्हें तबाह़ व बर्बाद कर दिया। "

ख़ुश हो जाओ और ऐसी चीज़ की उम्मीद करो जो तुम्हें ख़ुश कर देगी।

अरब के लोगों की आदत थी कि जब वह किसी चीज़ के देने का वादा करते तो कहते खुश हो जाओ यानी तुम्हारी ज़रूरत पूरी हो गई या जल्द ही पूरी कर दी जाएगी। यह बहुत ही प्रभावित और असर करने वाला शब्द है। और इसमें नेक फाली (आशावाद: Optimism)भी है

अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कहने " व अम्मिल् " का मतलब है जो चाहो मांग लो। क्योंकि जब तक मैं तुम्हारी गुज़ारिश और मांग को पूरी करने की ताकत और क्षमता रखता हूँ तब तक मैं उसे रद्द नहीं करूंगा। दौलत की उम्मीद करना पसंदीदा है खासतौर पर जबकि उसका इस्तेमाल सही जगह पर किया जाए। तुम अल्लाह पर ईमान रखते हो और मालदारी की आरज़ू करते हो और गरीबी से डरते हो तो यह चीज़ तुम्हारे इमान के खिलाफ नहीं है और न ही इससे तुम्हारे इमान में कोई फर्क पड़ेगा। क्योंकि यह इंसान की फितरत और उसकी की तबीयत में से है। और माल व दौलत पसंदीदा चीज़ है और उसके अनगिनित फायदे हैं तथा इसी पर तो एक अच्छी जिंदगी की बुनियाद है।

खुश हो जाओ और ऐसी चीज़ की उम्मीद करो जो तुम्हें खुश कर देगी।

लेकिन नबी ए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के फ़रमान " खुश हो जाओ और ऐसी चीज़ की उम्मीद करो जो तुम्हें खुश कर देगी" के बाद एक ह़िकमत की बात कही जिससे उस उम्मीद और तमन्ना की सीमा का पता चलता है। तथा यह उम्मीद व तमन्ना केवल वसतियत यानी संतुलन और मध्यमार्ग तक ही सीमित है। याद रहे कि जहाँ मोहताजी और फक़ीरी के नुकसान हैं वहीं मालदारी और आमीरी के भी बहुत से नुकसान हैं। लेकिन सारी भलाई वसतियत यानी संतुलन और मध्यमार्ग में ही है। और वह यह कि मुसलमान के पास इतनी दौलत हो कि जिससे वह अपना गुज़ारा कर सके न कि इतनी कि जिस की वजह से वह बिगड़ जाए।

तुम में से कोई जब किसी औरत को देखे तो वह अपनी पत्नी के पास आ जाए।

عَنْ جَابِرِ بنِ عبدالله – رضي الله عنه - أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ رَأَى امْرَأَةً فَأَتَى امْرَأَتَهُ زَيْنَبَ، وَهِيَ تَمْعَسُ مَنِيئَةً لَهَا فَقَضَى حَاجَتَهُ

ثُمَّ خَرَجَ إِلَى أَصْحَابِهِ فَقَالَ: "إِنَّ الْمَرْأَةَ تُقْبِلُ فِي صُورَةِ شَيْطَانٍ وَتُدْبِرُ فِي صُورَةِ شَيْطَانٍ فَإِذَا أَبْصَرَ أَحَدُكُمْ امْرَأَةً فَلْيَأْتِ أَهْلَهُ فَإِنَّ ذَلِكَ يَرُدُّ مَا فِي نَفْسِهِ

तुम में से कोई जब किसी औरत को देखे तो वह अपनी पत्नी के पास आ जाए।

" बेशक (फ़ितने में डालने के हवाले से) औरत शैतान की सूरत में सामने आती है और शैतान ही की सूरत में मुड़कर वापस जाती है। तुम में से कोई जब किसी औरत को देखे तो वह अपनी पत्नी के पास आ जाए। (यानी उससे अपनी ख्वाहिश पूरी करले) यकीनन यह चीज़ उस ख्वाहिश को दूर कर देगी जो उसके दिल में (उस औरत को देखकर पैदा हुई) है।"

नबी ए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम खुद अपने अ़मल के ज़रिए अपने सहाबा ए किराम रद़ियल्लाहु अ़न्हुम के लिए बेहतरीन मिसाल कायम करते थे। आप उन्हें बताते कि अल्लाह से किस तरह डरा जाए और एक मुसलमान उस फ़ितने से कैसे बचे कि जिसमें उसे पड़ने का अंदेशा हो।

लिहाज़ा इसी मकसद के लिए निकाह को लागू किया गया। लिहाज़ा जिसे शादी की सख्त जरूरत हो और ज़िना और बदकारी में पड़ने का अंदेशा हो और पत्नी के खर्च की ताकत रखता हो तो उसके लिए फोरन शादी करना वाजिब यानी जरूरी है। और जिसे शादी की जरूरत हो और खर्च देने की ताकत ना रखता हो लेकिन ज़िना का अंदेशा ना हो तो ऐसे व्यक्ति के लिए शादी करना मुस्तहब यानी बेहतर है। क्योंकि ऐसा व्यक्ति हर समय महफ़ूज़ नहीं रह सकता है।

तुम में से कोई जब किसी औरत को देखे तो वह अपनी पत्नी के पास आ जाए।

और इसी वजह से अल्लाह तआला ने मर्दों और औरतों दोनों को निगाह नीचे रखने और शर्मगाह (गुप्तांग) की हिफाज़त करने का हुक्म दिया है। लिहाज़ा जब मर्द किसी औरत को देखे तो निगाह नीची कर ले इससे पहले कि शैतान उसे बहकाए। क्योंकि अगर वह शैतान के बहकावे में आ गया और उसने पहला कदम उसकी तरफ उठा दिया तो हो सकता है कि वह शैतानी इरादे को अंजाम दिए बिना वापस ना आ सके।

अल्लाह ने मर्दों और औरतों के लिए एक सीमा रखी है और वह यह है कि उन्हें आपस में नाजायज़ मिलाप से मना फ़रमाया है ताकि किसी तरह का कोई भी फ़ितना ना हो। और मुसलमान पाक और साफ रहे। और नफ्स की ख्वाहिशें और शैतानी चालों से बचा रहे। बेशक यह सीमा और नियम क़ाएदा मज़हब और इज़्ज़त आबरू को महफ़ूज़ रखने का सबसे बेहतर ज़रिया है।

निगाह को आज़ाद रहने देने का एक बुरा असर यह भी है कि उससे दिल अल्लाह के ज़िक्र से गाफिल हो जाता है और वह लगातार गम और हसरत का शिकार हो जाता है।

तुम में से कोई जब किसी औरत को देखे तो वह अपनी पत्नी के पास आ जाए।

और कभी-कभी यह मरते दम तक रहता है। अल्लाह पाक बंदे को उसके अ़मल से ज़्यादा बदला देता है। तो जो अल्लाह के लिए किसी चीज़ को छोड़ता है अल्लाह उससे बेहतर बदला अ़ता करता है। लिहाज़ा जो अल्लाह की ह़राम की हुई चीज़ों से अपनी निगाह को नीचे कर लेता है तो अल्लाह उसके लिए ह़िकमत, बसीरत, ईमान, यकीन ज्ञान, पहचान और समझ के दरवाज़े खोल देता है जिन से उसका दिल रोशन हो जाता है और फिर वह अपने दिल की आंखों से दिलों के हाल पता कर लेता है।

वापस जाओ और खूब अच्छी तरह अपना वुज़ू करो।

عَنْ أَنَّ عُمَرَ بْنَ الْخَطَّابِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ - أَنَّ رَجُلًا تَوَضَّأَ لِلصَّلَاةِ فَتَرَكَ مَوْضِعَ ظُفُرٍ عَلَى قَدَمِهِ، فَأَبْصَرَهُ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: "ارْجِعْ فَأَحْسِنْ وُضُوءَكَ" فَرَجَعَ ثُمَّ صَلَّى

तर्जुमा: हज़रत उमर बनि खत्ताब बयान करते हैं: एक वयक्ति ने वुज़ू कयि तो अपने पांव पर एक नाखून जतिनी जगह छोड़ दी। नबी ए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उसको देख लयि और फ़रमाया: "वापस जाओ और खूब अच्छी तरह अपना वुज़ू करो।" वह वापस गया और (अच्छी तरह से वुज़ू करके फरि) नमाज पढ़ी। "

वापस जाओ और ख़ूब अच्छी तरह अपना वुज़ू करो।

ऊलमा ए करिाम वूज़ू की परभिाषा यह बयान करते हैं कि इबादत की नयित से शरीर के वशिेष अंगों को पानी से धोकर पाकी हासलि करने के नाम वूज़ू है।

वुज़ू को ऊलमा ए करिाम त़हारते सुगरा यानी छोटी पाकी कहते हैं। और जनाबत (जमिाअ़ और सेक्स वगैरह), ह़ैज़ (माहवारी) और नफिास (बच्चे की पैदाइश के बाद आने वाला खून) से पाकी हासलि करने को त़हारते कुबरा यानी बड़ी पाकी कहते हैं।

और कुछ फर्ज़ हैं और कुछ सुन्नतें, मुस्तह़बात, शर्तें और आदाब हैं जन्हिें ऊलमा ए करिाम ने अपनी कतिाबों में बयान कयिा है। लहिाज़ा ए मुसलमान भाइयों! अगर आप चाहते हैं कि आपका वुज़ू मुकम्मल और पूरा हो तो आपको उन आदाब का ख्याल रखना ज़रूरी है ताकि आपको ज़्यादा से ज़्यादा सवाब मलि और आपके ईमान में चार चांद लग जाएं।

वुज़ू करते समय इस बात का ख्याल रहे कि उसके अंगों में कसिी भी अंग का कोई भी हस्सिा धोने से रह ना जाए वरना तो वुज़ू नहीं होगा और जब वुज़ू नहीं होगा तो नमाज़ भी नहीं होगी।

वापस जाओ और खूब अच्छी तरह अपना वुज़ू करो।

यहाँ पर ह़दीस़ पाक में जो अच्छी तरह वुज़ू करने का मतलब है वह यह है कि अल्लाह तआ़ला इत़ाअ़त (आज्ञा का पालन करना) और इ़बादत की नियत से वज़ू में फर्ज़ हर अंग धुल जाए और उस पर पानी बह जाए। लेकिन फ़र्ज़ो की आदाइगी के बाद अच्छी तरह वुज़ू उस समय होगा जबकि उसकी सुन्नतों और मुस्तह़बात वगैरह का भी ख़्याल किया जाए।

(याद रहे कि वूज़ू के चार फर्ज़ हैं। और वे यह हैं: (1) कोहनियों समीत दोनों हाथों को धोना। (2) पूरे चेहरे को धोना। (3) कम से कम चौथाई सर का मसह करना। (4) टखनों समीत दोनों पावों को धोना।)

अगर आप चाहते हैं कि आपका ईमान और भी पक्का, आपका दिल पाक व साफ हो, नमाज़ में आपको अल्लाह वालों जैसा मज़ा आए तो वुज़ू के शुरू से आखिर तक तीन बातों का ख़्याल रखें। वे ये कि हर अंग धोते समय अल्लाह की नेमत को याद करें और उसका शुक्र अदा करें कि उसने आपको इस अंग की नेमत अता फरमाई और इस अंग से जो गुनाह हुए हैं उन्हें याद करके अल्लाह से माफी मांगे और इस बात का इरादा करें कि उसे गुनाहों से महफ़ूज़ रखेगा। इस तरह से आप अपने वुज़ू से ज़िक्र,

वापस जाओ और खूब अच्छी तरह अपना वुज़ू करो।

शुक्र और अपने गुनाहों से तौबा करके उठोगे। अतः जब पानी के पास बैठो तो उस पर अपने दिल और अपनी ज़ुबान से अल्लाह का शुक्र अदा करो कि अल्लाह ने आपको उसे इस्तेमाल करने की ताकत दी है और जब अपनी हथेलियों को धोएं तो इस पर अल्लाह का शुक्र अदा करें कि उसने आपको यह हथेलियाँ दी हैं। उनसे होने वाले गुनाहों को याद करके अल्लाह से माफी मांगें और उसकी बारगाह में सच्ची तौबा करें शायद कि अल्लाह आपकी तौबा क़ुबूल करले।

और जब आप कुल्ली करें तो मुंह और उसकी नेमतों पर अल्लाह का शुक्र अदा करें और ज़बान से होने वाले गुनाहों को याद करते हुए अल्लाह से उनकी माफी मांगें और सच्ची तौबा करें।

इसी तरह चेहरे और हाथों को धोते समय मसह करते समय और पांव धोते समय करें। लिहाज़ा अगर आपने इस तरह वूज़ू किया जैसा कि मैंने आपसे ऊपर बयान किया तो यक़ीनन आप जान लेंगे कि यही सही वूज़ू है। और अगर वुज़ू इस तरह का न हो तो वह गाफिलों का वुज़ू है। और आपको अच्छी तरह से पता चल जाएगा कि पाकी आधा ईमान है।

दो लानत के कामों (यानी जिनकी वजह से लोग तुम पर लानत करें उन) से बचें।

عَـنْ أَبِي هُرَيْـرَةَ - رضي الله عنـه - أَنَّ رَسُـولَ اللَّـهِ صَـلَّى اللَّـهُ عَلَيْـهِ وَسَـلَّمَ قَـالَ: "اتَّقُـوا اللَّعَّانَيْنِ
قَالُوا: وَمَا اللَّعَّانَانِ يَا رَسُولَ اللَّهِ؟

ह़ज़रत अबुहुरैराह रद़यिल्लाहु अ़न्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: "दो लानत के कामों (यानी जनिकी वजह से लोग तुम पर लानत करें उन) से बचो। सह़ाबा ए करिाम ने पूछा: लानत का सबब बनने वाले वे दो काम कोन से हैं? नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: लोगों के रास्ते और साए में पाखाना- पैशाब करना।

दो लानत के कामों (यानी जिनकी वजह से लोग तुम पर लानत करें उन) से बचें।

इस्लाम हर उस चीज़ से पाकी और सफाई करने का हुक्म देता है जिसे इंसानी फितरत ना पंसद करती है या जिससे लोगों को तकलीफ होती है। अतः इस्लाम में पाकी आधा ईमान है। इंसान का हर ऐबदार चीज़ से पाक व साफ रहना उसकी अच्छी तबीयत, साफ फितरत, उसके बलंद एख़लाक और अच्छे व्यवहार की दलील है।

नबी ए करीम सल्लल्लाहु अलैहि विसल्लम के फ़रमान "दो लानत के कामों से बचो।" का मतलब है कि उन दोनों से दूर रहो। सहाबा ए करिाम रद़ियल्लाहु अन्हुम ने उन दो कामों के बारे में पूछा तो नबी ए करीम सल्लल्लाहु अलैहि विसल्लम ने बड़े ही प्यारे अंदाज़ में जवाब दिया कि वे दोनों काम "लोगों के रास्ते और साए में पाखाना- पैशाब करना।" है।यानी आम रास्ते या पेड़ या दीवार वगैरह के साए में पैशाब या पाखाना करना कि जहाँ लोग बैठते हों।

जिस तरह लोगों के रास्ते में पेशाब या पखाना करना सहीह़ व जायज़ नहीं है इसी तरह से वहाँ पत्थर, कांटे केले वगैरह के छिलके या दूसरी गंदगी फेंकना या वहाँ दूसरी ऐसी चीज़ें डालना भी जायज़ नहीं है जिन से रास्ते बंद हो जाएं और लोगों का चैन और सुकून खत्म हो जाए।

दो लानत के कामों (यानी जिनकी वजह से लोग तुम पर लानत करें उन) से बचें।

इसी तरह से मजलसिों, सभाओं, रास्तों, घरों और मस्जदिों वगैरह में शोर मचाना, आवाजें बुलंद करना और ऐसे शब्दों का इस्तेमाल करना भी जायज़ नहीं है जनि्हें शर्म व हया वाले लोग पसंद नहीं करते हैं।

इस्लाम अपने सभी कानूनों में लोगों को उनकी उस फतिरत की तरफ बुलाता है जसि पर अल्लाह ने उन्हें पैदा फरमाया है और हर ऐसी आदत को खत्म करता है जो उनकी सहीह़ और अच्छी फतिरत के खलिाफ हो। लहिाज़ा जो इस्लाम के कानूनों को जान ले और उन्हें मज़बूती से थाम ले तो वह हर ऐसे काम से दूर रहेगा जो शर्म व हया को खत्म करता हो या साफ-सुथरी फतिरत के खलिाफ हो।

यह ताऊन (या प्लेग Plague) एक अज़ाब है जो तुमसे पहले के लोगों पर भेजा गया था।

عَنْ أُسَامَةَ قَالَ رضي الله عنه أَنَّ رَسُولُ اللَّه صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: "إِنَّ هَذَا الطَّاعُونَ رِجْزٌ سُلِّطَ عَلَى مَنْ كَانَ قَبْلَكُمْ، أَوْ عَلَى بَنِي إِسْرَائِيلَ، فَإِذَا كَانَ بِأَرْضٍ، فَلَا تَخْرُجُوا مِنْهَا فِرَارًا مِنْهُ، وَإِذَا كَانَ بِأَرْضٍ فَلَا تَدْخُلُوهَا

तर्जुमा: ह़ज़रत उसामा रद़यिल्लाहु अ़न्हु बयान करते हैं: अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: यह ताऊन (या प्लेग Plague) एक अज़ाब है जो तुमसे पहले के लोगों पर भेजा गया था। (या यह फ़रमाया) बनी इस्राइल पर भेजा गया था। अगर यह किसी जगह हो तो तुम उससे से भागकर वहाँ से (कहीं ओर) मत जाना और अगर किसी दूसरी जगह में हो तो वहाँ मत जाना।"

यह ताऊन (या प्लेग Plague) एक अज़ाब है जो तुमसे पहले के लोगों पर भेजा गया था।

इस्लाम अपने तरीके में हकीक़त, यथार्थवादी, अपने कानूनों व नियमों में इंसाफ और अपने हुक्मों में आसानी पर आधारित है जो दुनिया और आखिरत दोनों में बंदो की मसलहितों (भाईयों) और फायदों का पूरा ख्याल रखता है।

बंदो की मसलहितें (या भलाईयाँ) दो चीज़ों पर आधारित हैं और वे दो चीज़ें: खराबीयों को दूर करना और मसलहितों को हासिल करना हैं।

बेशक खराबियों को दूर करना भालाईयों को हासिल करने से पहले है। जैसा कि इस्लामी नियमों के माहिर उलमा कहते हैं। इसी तरह बुरे अख़लाक या बुरी चीज़ों को छोड़ना अच्छे अख़लाक या अच्छी चीज़ों को अपनाने से पहले है जैसा के अज़हर के उलमा कहते हैं। तथा परहेज़ इलाज से बेहतर है जैसा कि डॉक्टर कहते हैं।

यकीनन यह हदीस शरीफ नुकसानदेह यानी हानिकारक बीमारियों और हलाक करने वाली यानी घातक आफतों से बचने के कानूनों और नियमों में से एक कानून और नियम है जिसे डॉक्टर क्वारंटीन (Quarantine) कहते हैं यानी महामारी (फैलने वाली) बीमारियों को रोकने के मकसद से स्वस्थ लोगों को रोगियों और रोगियों को स्वस्थ लोगों से मिलने से रोक देना।

यह ताऊन (या प्लेग Plague) एक अज़ाब है जो तुमसे पहले के लोगों पर भेजा गया था।

ताऊन एक ऐसा घातक वरम है जो बगल, कान के पीछे, नाक और नरम गोश्त में पैदा होता है। यह एक ऐसी घातक बीमारी है कि यह जिस अंग में हो जाती है उसे और बराबर वाले को खराब कर देती है और कभी इसकी वजह से इंसान के अंदर से खून और पीप निकलती है जिसकी वजह से जल्द ही उसकी मौत हो जाती है।

नबी ए करीम सल्लल्लाहु अलैहि के फरमान: " यह ताऊन एक अज़ाब है।" का मतलब है कि यह एक सख़्त अज़ाब था जो बनी इसराइल या उन जैसे लोगों पर दुनिया में सज़ा के तौर पर भेजा गया था।

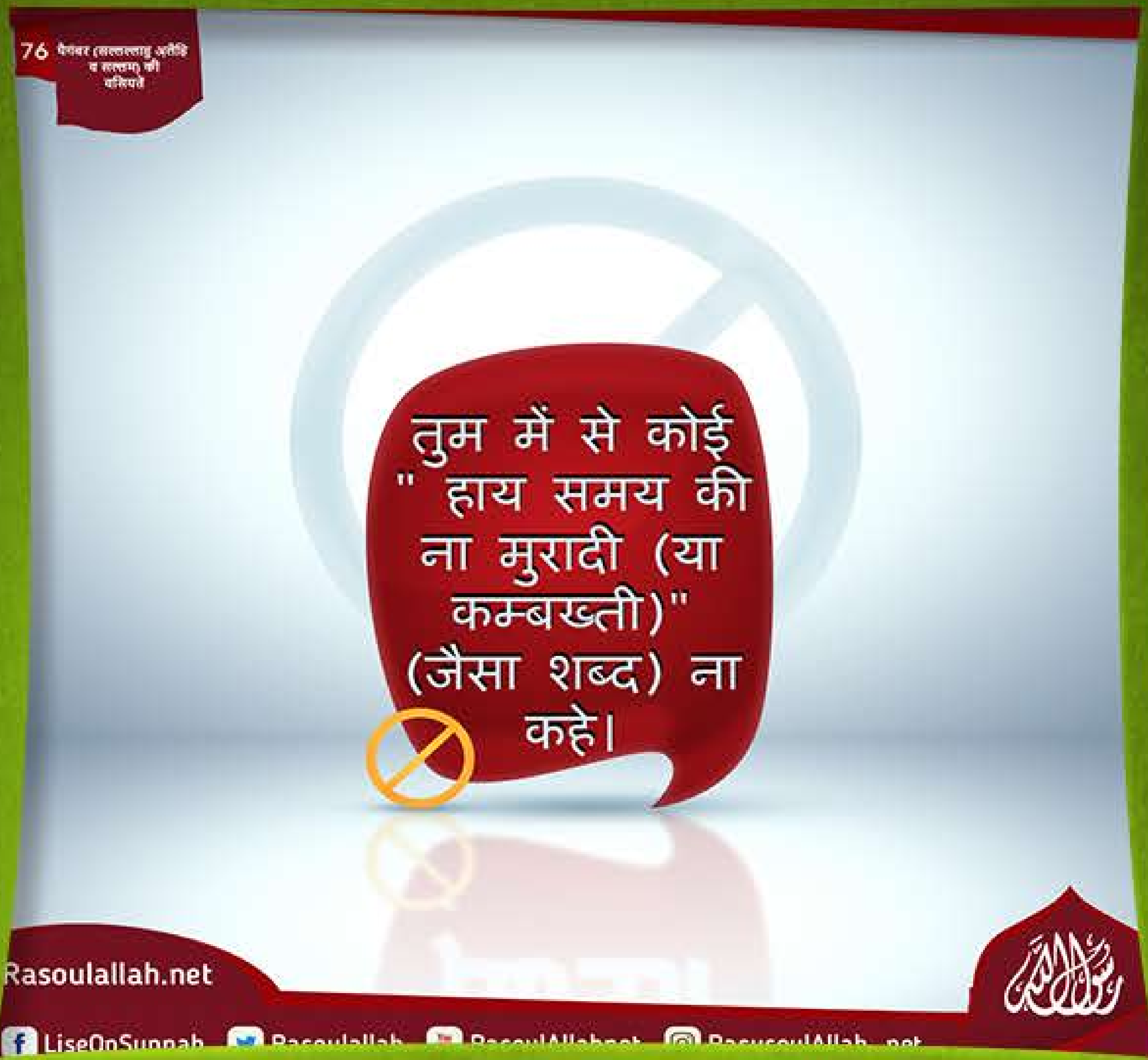

तुम में से कोई " हाय समय की ना मुरादी (या कम्बख्ती)" (जैसा शब्द) ना कहे।

عَـنْ أَبِي هُرَيْـرَةَ - رضي اللـه عنـه - أَنَّ رَسُـولَ اللَّـهِ صَـلَّى اللَّـهُ عَلَيْـهِ وَسَـلَّمَ قَـالَ: " قَالَ اللَّـهُ عَـزَّ وَجَـلَّ يُؤْذِينِـي ابْـنُ آدَمَ يَقُـولُ: يَـا خَيْبَـةَ الدَّهْـرِ! فَلَا يَقُولَـنَّ أَحَدُكُـمْ: يَا خَيْبَةَ الدَّهْرِ؛ فَإِنِّي أَنَا الدَّهْرُ أُقَلِّبُ لَيْلَهُ وَنَهَارَهُ، فَإِذَا شِئْتُ قَبَضْتُهُمَا

तर्जुमा: हज़रत अबू हुरैरा रद़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला ने इरशाद फ़रमाया: " आदम का बेटा मुझे तकलीफ देता है कि वह कहता है: "हाय समय की ना मुरादी (या कम्बख्ती)! तुम में से कोई " हाय समय की ना मुरादी (या कम्बख्ती)" (जैसा शब्द) ना कहे। क्योंकि मैं ही समय (का मालिक) हूँ। (क्योंकि) मैं (ही) रात और दिन को पलटता हूँ और मैं जब चाहूंगा उन्हें खत्म कर दूंगा। "

तुम में से कोई " हाय समय की ना मुरादी (या कम्बख्ती)" (जैसा शब्द) ना कहे।

बर्दाश्त करना इस्लाम में सभी अख़लाक से बेहतर विशेषता है। और मुसीबतों और परेशानियों में सब्र करना ईमान का आधा हिस्सा और अल्लाह की नेमतों पर शुक्र अदा करना उसका दूसरा हिस्सा है। अतः अगर मुसलमान के अंदर बर्दाश्त, सब्र और शुक्र जैसी अच्छी विशेषताएं और सिफतें ना हों तो यकीनन उसके अंदर बेवकूफी, मुसीबत पर रोना-धोना और ना शुकरी करना जैसी बुरी विशेषताएं ही होंगी।

सब्र और बर्दाश्त से काम लेने और हमेशा अल्लाह की नेमतों पर शुक्र अदा करने का नतीजा यह होता है कि इंसान सभी हालतों को बड़ी ह़िकमत अक्लमंदी, समझदारी और अच्छी तरह से संभाल लेता है। मुसीबतों और परेशानियों का बड़े इत्मीनान और सुकून से सामना करता है और नेमतों के शुक्रिया के तौर पर ऐसे कामों को अंजाम देता है जिनसे उस पर और भी नेमतों की बारिश होने लगती है।

बर्दाश्त का मतलब है: नरमी, कोमलता और दया से काम लेना, गुस्से को पी जाना और माफ करना। अल्लाह ताआ़ला ने अपने बंदों को बर्दाश्त करने की दावत दी है और उन्हें उस पर उभरा भी है।उसने बर्दाश्त से काम लेने वाले की तारीफ की है और उसे जन्नत देने का वादा फरमाया है जिसकी चौड़ाई आसमानों और जमीनों की तरह है।

तुम में से कोई " हाय समय की ना मुरादी (या कम्बख्ती)" (जैसा शब्द) ना कहे।

सब्र से काम लेना एक बुलंद और ऊंचा स्थान है। अल्लाह ताआला ने उसे इंसान के लिए इताअत और फरमांबरदारी (आज्ञाकारिता), नेक काम करने, गुनाहों को छोड़ने और मक़सदों और लक्ष्यों को पहुंचने के लिए एक बेहतरीन मददगार और सहायक बनाया है। जबकि शुक्र के बारे में हमारा यही कहना काफी है कि यह इबादत की आत्मा और जान है।

हाए समय की नामुरादी (या कम्बख्ती या खराबी जैसे) शब्द कोई बुरा काम होने या अच्छा काम छूट जाने पर हसरत और अफसोस जताने के लिए बोला जाते हैं।

ऐ मेरे प्यारे मुसलमान भाई! सबसे बड़ी और बेहतर चीज़ जिसके ज़रिए बंदा अपने अल्लाह से नज़दीक होता है वह यह है कि वह अपने कहने,

तुम में से कोई " हाय समय की ना मुरादी (या कम्बख़्ती)" (जैसा शब्द) ना कहे।

करने में और सभी हालतों में अपने अल्लाह के साथ बड़े अदब और एह्तराम के साथ पेश आए। कोई भी इंसान अल्लाह के नज़दीक स्थान तक उस समय तक नहीं पहुंच सकता जब तक कि वह पूरी तरह से अपनी ज़बान को हर ऐसे शब्द से महफ़ूज़ ना रखे जो अल्लाह की तारीफ से खाली या उसके खिलाफ़ हो या उसमें अल्लाह की मोहब्बत की झलक ना हो या फिर वह अल्लाह के किसी बंदे को तकलीफ का सबब हो। और उस समय तक कोई भी अल्लाह के अज़ाब से नहीं बच सकता जब तक कि उसके काम उसके कहने के मुताबिक ना हों। लिहाज़ा कोई भी ऐसी बात ना करे जो खुद नहीं करता हो। और ऐसी चीज़ पर गर्व न करे जो उसके अंदर ना हो।

ए अल्लाह मैं तुझसे हर वह भलाई मांगता हूँ जो तेरे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मांगी

عَنْ أَبِي أُمَامَةَ – رضي الله عنه - أَنَّ رَسُولُ اللَّه صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ دَعَا بِدُعَاء كَثِيرٍ لَمْ نَحْفَظْ مِنْهُ شَيْئًا، قُلْتُ يَا رَسُولَ اللَّه! دَعَوْتَ بِدُعَاءِ كَثِيرٍ لَمْ نَحْفَظْ مِنْهُ شَيْئًا، فَقَالَ فَقَالَ "أَلَا أَدُلُّكُمْ عَلَى مَا يَجْمَعُ ذَلِكَ كُلَّهُ؟". تَقُولُ اللَّهُمَّ إِنِي أَسْأَلُكَ مِنْ خَيْرِ مَا سَأَلَكَ مِنْهُ نَبِيُّكَ مُحَمَّدٌ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - وَأَعُوذُ بِكَ مِنْ شَرِّ مَا اسْتَعَاذَ مِنْهُ نَبِيُّكَ مُحَمَّدٌ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - وَأَنْتَ الْمُسْتَعَانُ، وَعَلَيْكَ الْبَلَاغُ، وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ

तरजुमा: हज़रत अबू उमामह रदियल्लाहु अनहु कहते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बहुत सारी दुआएं की मगर हमें उनमें से कोई दुआ याद ना रही। मैंने कहा: ए अल्लाह के रसूल! दुआएं तो आपने बहुत सी कीं। मगर मैं कोई दुआ याद ना रख सका। आपने फ़रमाया: " क्या मैं तुम्हें ऐसी दुआ ना बता दूं जो उन सब दुआओं को शामलि हो। तुम कहो:

ए अल्लाह मैं तुझसे हर वह भलाई मांगता हूँ जो तेरे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने

(अल्लाहुम्मा इन्ना नस आलुका मनि खैरि मा सअलका मन्हिु नबयि्युका मोहम्मदुन - सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम- व अऊ़जु बकि मनि शर्रि मा इस्तआ़ज़ा मन्हिु नबयि्युका मोहम्मदुन - सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम- व अन्त अल मुस्तआ़न, व अ़लैका अल अल बलाग़, व ला हौला व ला कु़व्वता इल्ला बल्लिाही)

तर्जुमा: ए अल्लाह मैं तुझसे हर वह भलाई मांगता हूँ जो तेरे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने मांगी और हर उस चीज़ से पनाह (यानी शरण) चाहता हूँ जसिसे तेरे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने पनाह चाही। तू ही मदद करने वाला है। तू ही (हर भलाई और बुराई) पहुंचाने वाला है। और गुनाहों से बचने की ताकत और नेकी करने की हम्मित भी सरि्फ अल्लाह ही की तरफ से है। "

ए अल्लाह मैं तुझसे हर वह भलाई मांगता हूँ जो तेरे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने

नबी ए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम अल्लाह तआ़ला की बारगाह में बहुत सी दुआएं करते थे जिनमें भलाई की तमाम खूबियां होती थीं। और आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ऐसे अछूते व निराले और शानदार अंदाज़ में दुआएं फरमाते थे जो मुसलमानों के दिलों में घर कर जाता और सुनने वालों की भावनाओं पर अपना सिक्का जमा लेता। यही वजह है कि वे उन दुआओं के शब्दों को याद करने की बहुत ज़्यादा कोशिश करते ताकि वे भी नबी ए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की तरह उन शब्दों के ज़रिए अपने अल्लाह की बारगाह में गिड़गिड़ा कर दुआएं करें। क्योंकि वे जानते थे की दुआ इ़बादत का गूदा, बंदे की सच्ची बंदगी का अनुवादक और अल्लाह की उसे पूरी ज़रूरत और आवश्यकता होने के लिए बेहतरीन दलील है।

अल्लाह की बारगाह में दुआ करना पैगम्बरों का तरीक़ा रहा है। वे सब लोगों से ज़्यादा अल्लाह की बारगाह में दुआ़ करते थे। और सारे पैगम्बरों में सबसे ज़्यादा आखरी नबी हमारे पैगंबर मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम अल्लाह की बारगाह में दुआ़ करते थे।

ए अल्लाह मैं तुझसे हर वह भलाई मांगता हूँ जो तेरे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने

और फिर हर उम्मत के औलिया ए इकराम और अल्लाह के नेक बंदों ने अपने पैगम्बरों के तरीक़े पर चलते हुए इस अ़मल को बाकी रखा। लेकिन उनमें सबसे ज़्यादा भाईयों और नेकियों की तरफ दौड़ने वाले और नेक दिल से दुआएं करने वाले हमारे पैगंबर मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि विसल्लम के सहाबा और फिर क़यामत तक उनके नक्शे कदम पर चलने वाले अल्लाह के नेक बंदे हैं।

इसमें कोई शक नहीं है कि नबी ए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि विसल्लम से उल्लेख शब्दों के जरिए दुआ़ करना ही सबसे बेहतर, कबूलियत के ज़्यादा करीब और बहुत ज़्यादा सवाब का कारण है वरना तो सहाबा ए करिाम रद़यिल्लाहु अ़न्हुम नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि विसल्लम की दुआओं के शब्दों को याद करने के लिए क्यों मेहनत करते?

लिहाज़ा मुसलमान नबी ए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से उल्लेख दुआओं में से ऐसी दुआ़ इख्तियार करे जिसे वह आसानी से के साथ बोल और याद कर सके, जिससे उसे आनन्द हासिल हो और जो उसकी मांग और ज़रूरत के ज़्यादा मुनासिब हो।

ए अल्लाह मैं तुझसे हर वह भलाई मांगता हूँ जो तेरे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने

दुआ में इस बात का ख्याल रखा जाए कि दुआ़ इस तरह से की जाए कि बंदा अल्लाह की बारगाह में पूरे तौर पर अपनी आ़जज़ी और मोहताजी को ज़ाहिर करे और फिर अपनी ज़रूरत मांगे।

याद रखें की दुआ के कुछ आदाब हैं जिनका ख्याल करना बहुत ज़रूरी है वरना तो हो सकता है कि शायद आपकी दुआ़ कबूल ना हो।

अल्लाह से (खैर और) आफ़ियत (भलाई) मांगो।

عَـنِ الْعَبَّـاسِ بْـنِ عَبْـدِ الْمُطَّلِـبِ رَضِيَ اللـه عَنْـهُ قَـالَ: قُلْـتُ: يَـا رَسُـولَ اللَّـه! عَلِّمْنِـي شَـيْئًا أَسْـأَلُهُ اللَّـهَ عَـزَّ وَجَـلَّ، قَـالَ: "سَـلِ اللَّـهَ الْعَافِيَـةَ" فَمَكَثْـتُ أَيَّامًـا ثُـمَّ جِئْـتُ فَقُلْـتُ: يَـا رَسُـولَ اللَّـهِ عَلِّمْنِـي شَـيْئًا أَسْـأَلُهُ اللَّـهَ، فَقَـالَ لِي: "يَـا عَبَّـاسُ يَـا عَـمَّ رَسُـولِ اللَّهِ سَلِ اللَّهَ الْعَافِيَةَ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ

तर्जुमा: ह़ज़रत अ़ब्बास बनि अब्द अल मुत्त़लबि कहते हैं कि मैंने (अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से) कहा: ए अल्लाह के रसूल! मुझे कोई ऐसी चीज़ सिखाइये जिसे मैं अल्लाह से मांगता रहूँ। नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

अल्लाह से (खैर और) आफ़ियत (भलाई) मांगो।

"अल्लाह से (खैर और) आ़फयित (भलाई) मांगो।" फरि कुछ दनि बाद मैं अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास आया और मैंने कहा: "ए अल्लाह के रसूल! मुझे कोई ऐसी चीज़ सखिाइये जसि मैं अल्लाह तआ़ला से मांगता रहा हूँ। "तो नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया:"ए अ़ब्बास! ए अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के चचा! दुनयाि और आखरित में (खैर और) आ़फयित (भलाई) मांगो।"

(खैर और) आ़फयित (भलाई) का मतलब है आज़माइश, मुसीबत और तकलीफ का खत्म हो जाना। बुरे अंजाम वाले कामों से महफ़ूज़ रहना।और हर बीमारी से ठीक होना। तथा तंदुरुस्ती और सेहत यानी स्वस्थ को भी आ़फयित कहा जाता है।

अ़रबी भाषा में आ़फयित और मुआ़फात दोनों का एक ही माना है। तथा यह भी कहा जाता है कि मुआ़फात का मतलब है कि अल्लाह तुझे लोगों से और उन्हें तुझ से महफ़ूज़ रखे यानी तुझे उनसे और उन्हें तुझसे बेनयिाज़ रखे और तुझे उनकी तकलीफों से और उन्हें तेरी परेशानयिों से महफ़ूज़ रखे।

अल्लाह से (खैर और) आफ़ियत (भलाई) मांगो।

लहिाज़ा इससे हमें पता चलता है कि जिसि चीज़ में भी आफयित और भलाई होती है तो वह उसे संवार देती है और उसकी शान बढ़ा देती है। और जसि चीज़ से आफयित और भलाई खत्म कर दी जाती है तो वह चीज़ ऐबदार हो जाती है और उसकी शान घट जाती है। लहिाज़ा खैर और आफयित में ही भालाईयाँ हैं।

लहिाज़ा जब कोई बंदा अपने अल्लाह से खैर और आफयित मांगता है तो गोया कि वह अपने अल्लाह से माफी और क्षमा भी मांगता है। लहिाज़ा अगर उसकी दुआ कुबूल हो गई तो यक़ीनन वह जन्नत में जाएगा इंशा अल्लाह।

नबी ए करीम सल्लल्लाहु अलैहि विसल्लम हमेशा अपनी सभी कामों में अपने अल्लाह से दुनयिा और आखरित की भलाई मांगते थे।

तू (मेरे रास्ते में) खर्च कर मैं तुझ पर खर्च करूंगा।

عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِي اللَّهم عَنْهم أَنَّ رَسُولَ اللَّه صَلَّى اللَّهم عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ قَالَ اللَّهُ: "أَنْفِقْ يَا ابْنَ آدَمَ أُنْفِقْ عَلَيْكَ

तर्जुमा: हज़रत अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह ताआला इरशाद फरमाता है:"ए आदम के बेटे! तू (मेरे रास्ते में) खर्च कर मैं तुझ पर खर्च करूंगा।"

इस हदीस का मतलब बिल्कुल सपष्ट और साफ़ ज़ाहिर है। लेकिन इसमें कुछ बारीकियाँ है जो हम आपसे बयान करना चाहते हैं ताकि आप हमारे साथ उन सब या कुछ में गौर और फिक्र करें और उनके मानों और मक़सदों से फायदा उठाएं।

तू (मेरे रास्ते में) खर्च कर मैं तुझ पर खर्च करूंगा।

(1) अल्लाह ताआ़ला का फरमान: "तू खुर्च कर।" यह एक आदेश है। लिहाज़ा जिन कामों में खर्च करना ज़रूरी है जैसे के ज़कात देना, बीवी बच्चों पर खर्च करना, माता पिता और जो उनके स्थान में हैं जैसे दादा दादी पर खर्च करना और मोहताज भाई और बहन पर खर्च करना जिनकी कोई देखभाल करने वाला ना हो। तो उन कामों में यह आदेश वुजूब यानी जरूरत को चाहता है। और जहाँ खर्च करना मुस्तहब यानी बेहतर हो तो वहाँ यह आदेश इस्तेह़बाब यानी बेहतरी को चाहता है जैसे कि गरीब, फकीर और मिस्किन और उन जैसे दूसरे मोहताज लोगों को सदक़ा और खैरात देना खासकर जब जरूरतमंद और मोहताज लोग कोई रिश्तेदार या पड़ोसी या कोई दोस्त या तालिब इल्म या कोई और नेक व्यक्ति हो।

(2) "तु खर्च कर" इसका मतलब है अपने माल में से सखावत और खुले दिल के साथ खर्च करो।

अत: मुसलमान उसी समय सखी यानी दाता कहा जाता है जबकि वह बहुत ज़्यादा सदक़े और खैरात निकाले और अल्लाह के रास्ते में खुशी खुशी खर्च करे। क्योंकि वह अल्लाह के अ़ज़ाब से उसी समय बच सकता है जबकि वे कंजूसी और लालच जैसी बुरी आफतों से दूर रहे, दुनिया को अहमियत ना दे, उसकी ख्वाहिश दिल से निकाल दे और सिर्फ और सिर्फ उन्हीं नेमतों की ख्वाहिश करे जो अल्लाह के यहाँ हैं।

तू (मेरे रास्ते में) खर्च कर मैं तुझ पर खर्च करूंगा।

और मेरे प्यारे इस्लामी भाइयों! जो भी तुम कोई ऐसी चीज खर्च करोगे जसिमें लोगों का फायदा हो तो अल्लाह ताआ़ला तुम्हें दुनयिा और आखरित में उसका बेहतर बदला देगा। क्योंकि अल्लाह बहुत ज़्यादा फज़्ल करने वाला और देने वाला है। उसकी अ़ताई कभी खत्म नहीं होती। वह अपने बंदों को बनि मांगे देता है। और जो उस पर वशि्वास रखता और ईमान लाता है और उसके रास्ते में खर्च करता है उसकी दौलत में बरकत फरमाता है।

याद रखें कि इस दुनयिा में जतिने भी लोग आए और कयामत तक जतिने भी आएंगे उनमें सबसे ज़्यादा सखावत करने वाले और सबसे बड़े दाता हमारे पैगंबर मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम हैं। आपका हाथ हवाओं की तरह था। जसि तरफ भी जाते बांटते चले जाते थे। अपने से दुसरों को पहले रखते, मेहमान की मेहमान नवाजी करने, जरूरतमंद की मदद और उसकी ज़रूरत पूरी करने, भूखे को खाना खाना खलिाने और कर्ज़दारों का कर्ज़ा अदा करने में कोई कसर नहीं छोड़ते जैसा कि हम सभी को ये चीज़ें आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की सीरत पाक और ज़दिगी के बारे में पढ़ने से अच्छी तरह मालूम हैं।

तुम सब अल्लाह के बंदे हो।

عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: "لَا يَقُولَنَّ أَحَدُكُمْ عَبْدِي وَأَمَتِي، كُلُّكُمْ عَبِيدُ اللهِ، وَكُلُّ نِسَائِكُمْ إِمَاءُ اللهِ، وَلَكِنْ لِيَقُلْ غُلَامِي وَجَارِيَتِي وَفَتَايَ وَفَتَاتِي

तर्जुमा: हज़रत अबू हुरैरा रद़ियल्लाहु अ़न्हु कहते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: "तुम में से कोई व्यक्ति अपने (ग़ुलाम या नौकर और नौकरानी) को "मेरा बंदा और मेरी बंदी " ना कहे। तुम सब अल्लाह के बंदे हो और तुम्हारी सभी औरतें अल्लाह कि बंदियाँ हैं। बल्कि यूँ:"मेरा गुलाम (खादिम), मेरी खादिमा, मेरा लड़का (या बेटा) और मेरी लड़की (या बेटी)।"

तुम सब अल्लाह के बंदे हो।

इस ह़दीस़ शरीफ से हमें बहुत अहम सबक मिलता है वह यह है कि जहाँ तक हो सके हमें बात चीत करते समय अच्छे से अच्छे और लाभदायक और फायदेमंद शब्दों का प्रयोग करना चाहिए। और ऐसे शब्दों से बचना चाहिए जो अल्लाह की बारगाह के अदब के खिलाफ हों या जिनसे लोगों को ठेस पहुंचे या जो इंसानियत, अखलाकी नियमों और अच्छी आदतों के खिलाफ हों और अच्छाई से परे हों।

बेशक इस्लामी शरीयत एक मुकम्मल दीन और दुनिया के लिए एक मुकम्मल संविधान है। लोगों की जरूरतों के हर छोटे बड़े मसले का हल उसके अंदर मौजूद है।

बेशक सहाबा ए करिाम रद़यिल्लाहु अ़न्हुम नबी ए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से यह सब भी सीखते थे कि लोगों से किस तरह बात करना चाहिए और बातचीत के दौरान ऐसे कौन से शब्दों को इख्तियार करना चाहिए कि जिन से दूसरों की भावनाओं को ठेस ना पहुंचे और सुनने में बुरे ना लगें जैसा के इस ह़दीस़ शरीफ से साफ जाहिर है।

तुम सब अल्लाह के बंदे हो।

लिहाज़ा नबी ए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि विसल्लम ने फ़रमाया: "तुम में से कोई व्यक्ति अपने (ग़ुलाम या नौकर और नौकरानी) को "मेरा बंदा और मेरी बंदी" ना कहे।" यानी परिचय कराते हुए यह ना कहे कि यह मेरा बंदा है और यह मेरी बंदी है। क्योंकि यह अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की इज़्ज़त करने, उससे शर्म और हया करने और उसकी बारगह के अदब के खिलाफ है। तथा अपने नौकर या नौकरानी या ग़ुलाम पुरुष या ग़ुलाम औ़रत को ए मेरे बंदे और ए मेरी बंदी कहकर ना पुकारे। मक्योंकि इस शब्द में से गुलाम की तोहीन और रुसवाई और पुकारने वाले के गुरुर और घमंड की बू आती है।

लेकिन जो अल्लाह से शर्म और हया करता है तो वह इस तरह के शब्दों का इस्तेमाल नहीं करता है। बेशक हम सब अल्लाह ही के बंदे हैं। और हमारी सभी औरतें अल्लाह ही की बंदियाँ हैं। और यह बात हम फितिरती तौर पर जानते हैं। और हमें बेशक इसका पूरा यकीन है।

लिहाज़ा हमें नबी ए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि विसल्लम ने सिखाया कि हमें अपने गुलामों या नौकरों का परिचय कैसे कराना चाहिए या उन्हें किसि तरह से पुकारना होना चाहिए। लिहाज़ा आप सल्लल्लाहु अ़लैहि विसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि लेकिन यूँ कह सकता है कि" मेरा गुलाम, मेरी खादिमा, मेरा लड़का (या बेटा) और मेरी लड़की (या बेटी)।"

तुम सब अल्लाह के बंदे हो।

ये ऐसे शब्द हैं जिनमें प्यार और मोहब्बत और दया और समान झलकता है। और कहने वाले की नरमी, कोमलता और अल्लाह के साथ-साथ लोगों के लिए उसके दिल में अदब और एहतराम का पता चलता है। जैसे कि ये शब्द नफ़्स को उसकी सर कशी और घमंड से रोकते हैं और उसे अल्लाह की अ़ज़मत और सम्मान के आगे झुकने पर तैयार करते हैं।

इस्लाम गुलामी के खात्मे के लिए हमेशा कोशिश करता रहा है लेकिन ऐसे शांति और उद्देश्यपूर्ण तरीक़े से जिससे न तो अर्थव्यवस्था पर कोई असर पड़े, न ही न्याय और इंसाफ़ के खिलाफ़ है। बल्कि वह दया व रहमत और दिन और दुनिया में गुलामों के फ़ायदों का ख्याल करता है।

तुम्हारे भाई तुम्हारे नौकर हैं।

عَـنْ المَعْـرُورِ بْـنَ سُـوَيْدٍ، -رَضِيَ اللَّـهُ عَنْـهُ - قَـالَ: رَأَيْـتُ أَبَـا ذَرٍّ الغِفَـارِيَّ رَضِيَ اللَّـهُ عَنْـهُ وَعَلَيْـهِ حُلَّـةٌ، وَعَلَـى غُلاَمِـهِ حُلَّـةٌ، فَسَـأَلْتُهُ عَـنْ ذَلِـكَ، فَقَـالَ: قَـالَ : سَـابَبْتُ رَجُـلًا فَعَيَّرْتُـهُ بِأُمِّـهِ ، فَقَـالَ لِي النَّبِـيُّ صَـلَّى اللَّـهُ عَلَيْـهِ وَسَـلَّمَ : " يَـا أَبَـا ذَرٍّ! أَعَيَّرْتَـهُ بِأُمِّـهِ؟ إِنَّـكَ امْـرُؤٌ فِيـكَ جَاهِلِيَّـةٌ، إِخْوَانُكُـمْ خَوَلُكُـمْ جَعَلَهُـمْ اللَّـهُ تَحْـتَ أَيْدِيكُـمْ ، فَمَـنْ كَانَ أَخُـوهُ تَحْـتَ يَـدِهِ؛ فَلْيُطْعِمْـهُ مِـمَّا يَـأْكُلُ، وَلْيُلْبِسْـهُ مِـمَّا يَلْبَـسُ، وَلَا تُكَلِّفُوهُـمْ مَـا يَغْلِبُهُمْ، فَإِنْ كَلَّفْتُمُوهُمْ فَأَعِينُوهُمْ

तर्जुमा: मअरवर बनि सुवैद रदयिल्लाहु अनहु कहते हैं: मैंनें अबूज़र ग़फिारी रदयिल्लाहु अनहु को देखा कि उनके बदन पर भी एक जोड़ा था और उनके गुलाम के बदन पर भी उसी प्रकार का एक जोड़ा था।

तुम्हारे भाई तुम्हारे नौकर हैं।

मैंने उसका कारण पूछा तो उन्होंने बतलाया कि एक बार मेरी एक साहब से कुछ गाली-गलौच हो गई थी तो मैंने उन्हें उनकी माँ की शर्म दिला दी। उन्होंने नबी ए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि विसल्लम से मेरी शिकायत कर दी। तो आप सल्लल्लाहु अ़लैहि विसल्लम ने मुझसे पूछा: "क्या तुम ने उन्हें उनकी माँ की तरफ से शर्म दिलाई (यानी गाली दी) है? तो तुम ऐसे शख़्स हो जिसमें जाहिलियत है। तुम्हारे भाई तुम्हारे ग़ुलाम (या नौकर) हैं। अल्लाह तआ़ला ने उन्हें तुम्हारे मातहत कर दिया है। लिहाज़ा जिसका भाई उसके मातहत हो तो उसे चाहिए कि वह उसे वही खिलाए जो खुद खाता है। और वही पहनाए जो खुद पहनता है। और उन पर उनकी ताकत से ज़्यादा बोझ ना डालो लेकिन अगर (उनकी ताकत से ज़्यादा वोझ) डाल दो तो फिर उनकी खुद मदद भी करो।"

जरा गौर करें कि नबी ए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने यह फ़रमाया कि तुम्हारे भाई तुम्हारे ग़ुलाम (या खादीम और नौकर) ही हैं इसका उलटा यानी यह नहीं फ़रमाया कि तुम्हारे ग़ुलाम (या खादिम) तुम्हारे भाई हैं। इसकी वजह यह है कि नबी ए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ग़ुलाम और खादीमों के लिए भाईचारे को ज़ोरदार तरीक़े से साबित करना चाहते हैं।

तुम्हारे भाई तुम्हारे नौकर हैं।

क्योंकि खादिमों यानी नौकरों का हर समय अपने आकाओं (यानी मालिकों) के साथ रहना किसी हकीकी और सगे भाईचारे से कम नहीं है जबकि ईमान ही उसकी बुनियाद हो।

तथा कभी-कभार खादिम अपने आक़ा के लिए वह कुछ कर देता है जो उसका सगा भाई भी नहीं कर सकता। इसीलिए अ़रबी भाषा में एक कहावत है जिसका मतलब है:" आपके बहुत से भाई ऐसे भी हैं जिन्हें आप के माने माने नहीं जाना है।"

अल्लाह ताआ़ला ने क़ुरआन मजीद की बहुत सी आयतों में इस्लामी भाईचारे पर ज़ोर दिया है जैसा कि इस आयत में है:

وَاعْتَصِمُوا بِحَبْلِ اللَّهِ جَمِيعًا وَ تَفَرَّقُوا وَاذْكُرُوا نِعْمَتَ اللَّهِ
عَلَيْكُمْ إِذْ كُنْتُمْ أَعْدَاءً فَأَلَّفَ بَيْنَ قُلُوبِكُمْ فَأَصْبَحْتُمْ بِنِعْمَتِهِ
إِخْوَانًا وَكُنْتُمْ عَلَىٰ شَفَا حُفْرَةٍ مِنَ النَّارِ فَأَنْقَذَكُمْ مِنْهَا كَذَٰلِكَ
يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمْ آيَاتِهِ لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُونَ

तुम्हारे भाई तुम्हारे नौकर हैं।

तर्जुमा: सब मिलकर अल्लाह की रस्सी मजबूती से थाम लो और आपस में बट ना जाना और अल्लाह का एहसान अपने ऊपर याद करो जब तुम (एक दूसरे के) दुश्मन थे तो उसने तुम्हारे दिलों में मिलाप कर दिया। तुम उसकी नेमत से आपस में भाई भाई हो गए। (सूरह: आले इमरान, आयत संख्या: 103)

लिहाज़ा आक़ा को चाहिए कि वह अपने खादिम के साथ दया, रहमत और नरमदिली से पेश आए। उसकी भावनाओं की इज़्ज़त करे। उसकी हालतों का ख्याल रखे। उसकी जरूरतों को पूरा करे। और उसे भी अच्छी जिंदगी से आनंद लेने दे।

अगर आक़ा अपने खादिम यानी नौकर को अपनी जिंदगी की आनंद के सामान में से कुछ दे देगा और उसकी जरूरतों का ख्याल रखेगा तो वह खुश हो जाएगा। उसके दिल में हसद, जलन, अपनी ज़िल्लत और महरूमी का ख्याल ना आएगा। और अपने आपको परिवार एक सदस्य समझेगा। ऐसी सूरत में वह अपनी जिम्मेदारी भी अच्छी तरह अदा करेगा जिससे उसका आक़ा खुश रहेगा और हमेशा इस बात का ख्याल रखेगा कि कभी ऐसा काम ना करे जिससे उसका आक़ा यानी नाराज़ हो जाए और अगर कभी ना कभी उससे कुछ ऐसा काम हो जाए जिससे उसका मालिक नाराज़ हो तो वह उस पर शर्मिंदगी महसूस करेगा और फौरन माफी मांग लेगा।

तुम्हारे भाई तुम्हारे नौकर हैं।

लहिाज़ा खादमि आपकी इतनी ही फरमा बरदारी करेगा जतिना आप उसे देंगे। और आपके फायदे का इतना ही ख्याल करेगा जतिना आप उसकी भावनाओं की कद्र करेंगे और जतिना आप उसे सम्मान देंगें।

नौकर यानी खादमि या तो ईमानदार होगा या खयानत करने वाला, अगर ईमानदार हो तो इनाम से नवाजना चाहएि और अगर खयानत करने वाला हो तो उसे बेदखल कर देना चाहएि।

भले इंसान को जब आप सम्मान देंगें तो वह आपका हो जाएगा। उसकी भावनाएँ आपकी आशकि़ हो जाएंगी। वह आपका फरमाबरदार यान आज्ञाकारी हो जाएगा। आपके परविार से प्यार और मोहब्बत करेगा। और आपकी मौजूदगी और गैरमौजूदगी दोनों सूरतों में वह आपके लएि भलाई का चाहने वाला हो जाएगा। लेकनि कमीने शख्स को आप जतिना भी दे दें वह आपका शुक्रयिा अदा नहीं करेगा। जतिनी भी आप उसके साथ भलाई करलें लेकनि वह आपके साथ भलाई नहीं करेगा।

तुम्हारे भाई तुम्हारे नौकर हैं।

और नबी ए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि विसल्लम हमारे लिए बेहतरीन आदर्श हैं।

आप सल्लल्लाहु अ़लैहि विसल्लम खुशी-खुशी घर के कामों में अपनी बीवियों की मदद करते और उनका हाथ बटाते जैसे कि आप सल्लल्लाहु अ़लैहि विसल्लम खुद ही अपने कपड़े सी लेते और खुद ही अपनी चपलें दुरुस्त कर लेते और इनके अलावा दूसरे बहुत से काम भी खुद ही कर लेते।

इसी तरह अपने सहाबा ए करिम रद़यिल्लाहु अ़न्हुम के साथ भी उनके कामों में शरिकत करते और उनकी मदद करते और अपने आपको उनसे अलग करना पसंद नहीं करते।

बल्कि जो काम उनसे नहीं होता उसे आप सल्लल्लाहु अ़लैहि विसल्लम अंजाम देते थे।

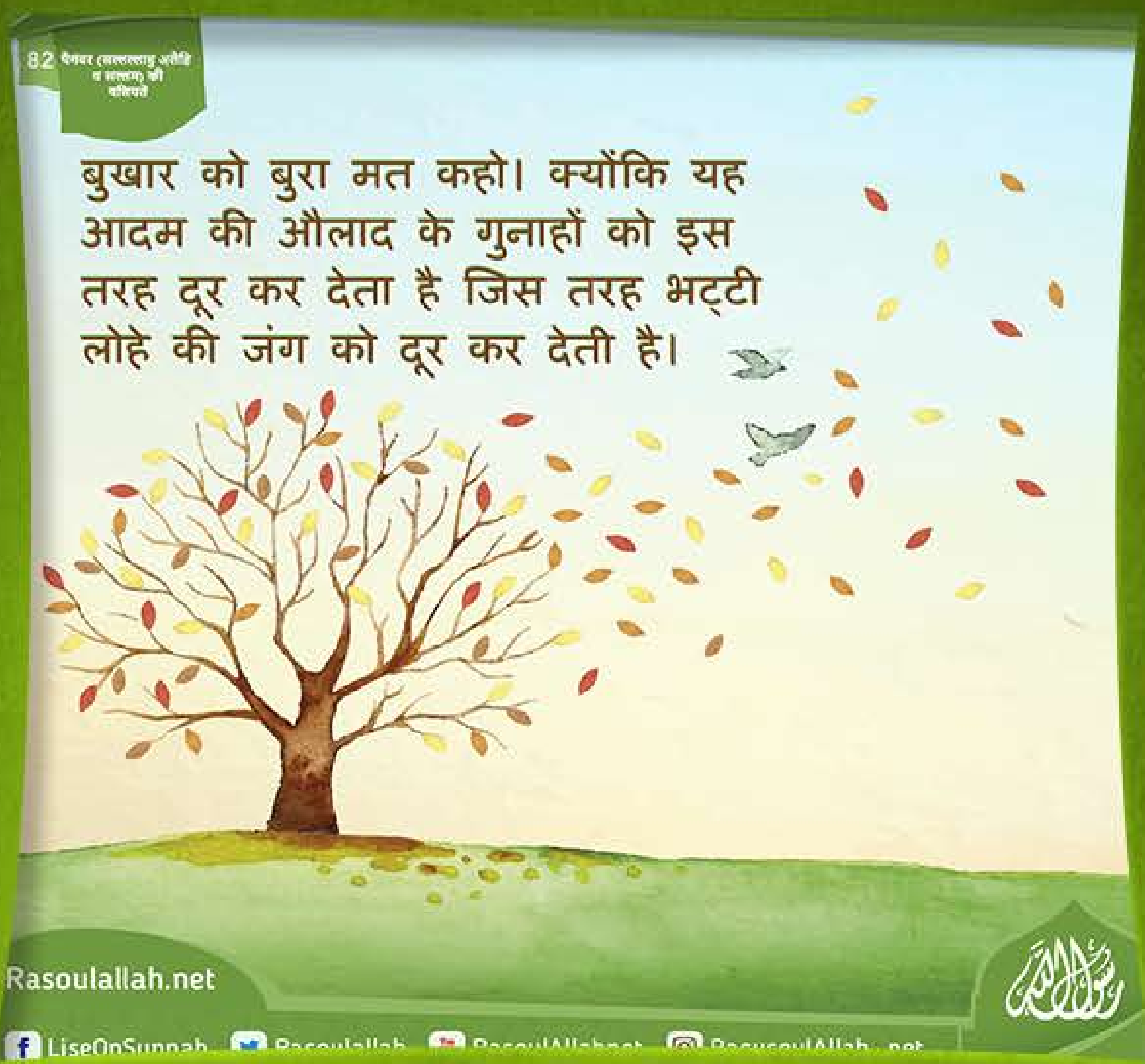

बुखार को बुरा मत कहो। क्योंकि यह आदम की औलाद के गुनाहों को इस तरह दूर कर देता है जिस तरह भट्टी लोहे की जंग को दूर कर देती है।

عَنْ جَابِر بن عَبدِ اللَّهِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ: أَنَّ رسُول اللَّه ﷺ دخَلَ على أُمِّ السَّائب -أَوْ: أُمِّ المُسَيَّب- فقَالَ: مَا لَكِ يَا أُمَّ السَّائبِ -أَوْ: يَا أُمَّ المُسيَّب- تُزَفْزِفينَ؟ قَالَتْ: الحُمَّى، لا بَارَكَ اللَّه فِيهَا، فَقَالَ:" لا تَسُبِّي الحُمَّى، فَإِنَّهَا تُذْهِبُ خَطَايا بَني آدَمَ كَما يُذْهِبُ الْكِيرُ خَبثَ الحدِيدِ

तर्जुमा: ह़ज़रत जाबरि बनि अ़ब्दुल्लाह रद़यिल्लाहु अ़न्हु कहते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम (एक अन्सारी औरत) ह़ज़रत उम्मे साइब -या उम्मे मुसय्यब- के यहाँ तशरीफ ले गए। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने उनसे फरमाया: "उम्मे साइब -या उम्मे मुसय्यब-! तुम्हें क्या हुआ है कि कांप रही हो?" उन्होंने कहा: "बुखार है। अल्लाह इस में बरकत ना दे।" आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फरमाया: "बुखार को बुरा मत कहो। क्योंकि यह आदम की औलाद के गुनाहों को इस तरह दूर कर देता है जिस तरह भट्टी लोहे की जंग दूर कर देती है।"

बुखार को बुरा मत कहो। क्योंकि यह आदम की औलाद के गुनाहों को इस तरह दूर कर देता है जिस तरह भट्टी लोहे की जंग को दूर कर देती है।

नबी ए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि विसल्लम कुछ सह़ाबा ए करिाम से मलिने के लिए खुद ही उनके घर तशरीफ ले जाते और उनसे अपने प्यार और मोहब्बत का सबूत देते। इसी तरह जब सह़ाबा ए करिाम रद़यिल्लाहु अ़न्हुम आपको मोहब्बत और बरकत के तौर पर अपने घर बुलाते तो आप उनकी दावत कुबूल करते और उनके घर तशरीफ़ ले जाते। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि विसल्लम बीमारों को देखने जाने का बहुत ख्याल रखते थे। उन्हें तसल्ली देते और उनके लयिे दुआएं करते जनिसे उनके दलिों को खुशी मलिती।

बुखार और उस जैसी दूसरी बीमारयिां मैं जब तक इंसान रहता है उनसे उसके गुना झड़ते रहते हैं यहाँ तक कि वह पूरी तरह गुनाहों से पाक हो जाता है बशर्ते कि वह उन बीमारयिों पर सब्र करे और इस मामले में अल्लाह के फैसले से खुश रहे।

ह़दीस़ शरीफ में इसकी बहुत ही प्यारी मसिाल बयान की गई है कि आप सल्लल्लाहु अ़लैहि विसल्लम ने फ़रमाया कि जिस तरह से भट्टी लोहे की जंग को पूरे तौर पर दूर कर देती है और वह लोहा नया दखिने लगता है इसी तरह से बुखार भी आग की भट्टी की तरह है जो बुखार वाले व्यक्ति को जब तक अल्लाह चाहता है गुनाहों से पाक करता रहता है।

बुखार को बुरा मत कहो। क्योंकि यह आदम की औलाद के गुनाहों को इस तरह दूर कर देता है जिस तरह भट्टी लोहे की जंग को दूर कर देती है।

लिहाज़ा बुखार जितना ज़्यादा रुकता है फायदा पहुंचाता है। यह एक तरह से इम्तिहान के बाद एक तोहफा और उपहार है।

तथा इस ह़दीस़ शरीफ में हमें अल्लाह ताआ़ला के साथ अदब और एहतराम के साथ रहने की शिक्षा मिलती है। हमें चाहिए कि हम कोई भी ऐसा शब्द अपनी ज़बान से ना निकालें कि जिससे तकदीर और भाग्य से असंतोष और नाखुशी का पता चले या जिससे मायूसी और निराशा की बू आए। और आसपास के लोगों और सुनने वालों को बुरा लगे तो वे हम से दूर भाग जाएं। और यह भी हो सकता है कि वे भी इसी तरह बिना सोचे समझे इस तरह के शब्दों का प्रयोग करें।

मुर्दों को गाली मत दो।

عَـنْ عَائِشَـةَ - رَضِيَ اللَّـهُ عَنْهَـا - أَنَّ النَّبِـيُّ - صَلَّى اللَّـهُ عَلَيْـهِ وَسَـلَّمَ - قَـالَ: "لَا تَسُبُّوا الْأَمْوَاتَ، فَإِنَّهُمْ قَدْ أَفْضَوْا إِلَى مَا قَدَّمُوا

तर्जुमा: हज़रत आएशा रद़यिल्लाहु अन्हा कहती हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "मुर्दों को गाली मत दो क्योंकि वह अपने किए को पहुंच गए हैं।"

इस्लाम से पहले जाहिली समय में अरब के लोग अपने पूर्वजों पर बहुत गर्व करते थे जिसकी वजह से जिदो की बुराई और मुर्दों को गाली-गलौच होती थी। वे अपने शायरों यानी कवियों को अपनी अच्छाइयाँ और दूसरों के एब और बुराइयाँ बयान करने पर उकसाते थे जिसकी वजह से उनके दिलों में आपस में हसद, कीना, नफरत और दुश्मनी घर कर जाती।

मुर्दों को गाली मत दो।

और नतीजा यह होता कि खूब ज़्यादा फितने और फसाद होते और हमेशा जंगे छिड़ी रहती थीं। लेकिन जब इस्लाम आया तो उसने इस परिवारी कट्टरता को खत्म कर दिया और इसके खतरों को साफ तौर पर जाहिर कर दिया। तथा रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम लोगों को अच्छे अखलाक और बेहतर व्यवहार की शिक्षा देते रहे यहाँ तक कि वह अपने अल्लाह से जा मिले और लोगों में मोहब्बत और भाईचारा फैल गया और वे सीधे रास्ते पर आ गए जिस से सिर्फ बेवकूफ और नादान व्यक्ति ही भटका हुआ था।

अल्लाह ने दूसरों पर हंसने यानी उनकी मजाक उड़ाने, उन्हें कम समझने, उनका अपमान करने और इन जैसी दूसरी उन तमाम बातों से मना किया जो गुरूर और घमंड की निशानी हों। और दूसरों को बुरे नामों से पुकारने से भी मना किया कि जिन्हें इंसान पसंद नहीं करता है। और इन सब चीजों के करने को गुनाह और सच्चे मुसलमान की विशेषताओं के खिलाफ बताया। हम यहाँ यह साफ कर देना चाहते हैं कि गाली-गलौच से मुराद हर वह बात है जिससे मुर्दों और जिंदो को तकलीफ पहुंचे। क्योंकि मुर्दों को गाली देने से उनके ज़िंदा रिश्तेदारों, पड़ोसियों, दोस्तों, मिलने वालों और उन सभी लोगों को तकलीफ होती है जो इंसानी और जिंदा ज़मीर और अपने सीनों में रहम और दयालु दिल रखते हैं।

जब तुम बीमार या मैयत के पास जाओ तो अच्छी बात कहो।

عَنْ أُمِّ سَلَمَةَ - رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا - أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - قَالَ: "إِذَا حَضَرْتُمُ الْمَرِيضَ، أَوْ الْمَيِّتَ، فَقُولُوا خَيْرًا؛ فَإِنَّ الْمَلَائِكَةَ يُؤَمِّنُونَ عَلَى مَا تَقُولُونَ".قَالَتْ: فَلَمَّا مَاتَ أَبُو سَلَمَةَ أَتَيْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقُلْتُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ، إِنَّ أَبَا سَلَمَةَ مَاتَ. قَالَ: "فَقُولِي: اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِي وَلَهُ وَأَعْقِبْنِي مِنْهُ عُقْبَى حَسَنَةً". قَالَتْ: فَقُلْتُ، فَأَعْقَبَنِي اللَّهُ مَنْ هُوَ خَيْرٌ لِي، مُحَمَّداً - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

तर्जुमा: मुसलमानों की माँ ह़ज़रत उम्मे सलमा रद़यिल्लाहु अ़न्हा कहती हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

जब तुम बीमार या मैयत के पास जाओ तो अच्छी बात कहो।

"जब तुम बीमार या मैयत के पास जाओ तो अच्छी बात कहो। क्योंकि जो तुम कहते हो उस पर फरिश्ते "आमीन" कहते हैं।" हज़रत उम्मे सलमा कहती हैं कि जब अबू सलमा का इंतकाल हुआ तो मैंनें नबी ए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आकर कहा: "ए अल्लाह के रसूल! अबू सलमा फौत हो गए हैं।" तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "तुम यह दुआ पढ़ो:

اللهم اغْفِرْ لِي وَلَهُ وَأَعْقِبْنِي مِنْه عُقْبَى حسنة

(अल्लाहुम्मा इगफ़रि ली व लहू व अअक़बिनी मिन्हू उक़बा हसनह)

यानी ए अल्लाह मुझे और उन्हें माफ कर दे और मुझे उनका अच्छा बदला दे।

वह कहती हैं जब मैंने यह दुआ की तो अल्लाह ने मुझे उनसे बेहतर (पति) दे दिया यानी अल्लाह के रसूल मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम। "

किसी मुसलमान का अपने बीमार मुसलमान भाई को देखने के लिए जाना उस पर और उसके परिवार वालों के लिए बरकत का कारण है कि वह बेहतरीन और अच्छी बातों से उसे तसल्ली दे।

जब तुम बीमार या मैयत के पास जाओ तो अच्छी बात कहो।

और नसीहत अच्छे डॉक्टर की तरफ उसकी रहनुमाई करके या कुछ ऐसी बातें करके अपने मुसलमान भाई को खुश करे जिससे उसकी तकलीफ कम हो जाए लेकिन साथ में खैरियत लेने के उन आम आदाब का भी ख़्याल रखे जिनकी अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने अपने कहने और करने के जरिए वसीयत फ़रमाई है। और सहाबा ए करिाम रद़यिल्लाहु अ़न्हुम से होते हुए हम तक पहुंचे हैं।

किसी मुसलमान भाई के इंतकाल पर उसके घर जाना उसके लिए सिफारिश और माफी का कारण है। क्योंकि आने वाला व्यक्ति अपने उस मुसलमान भाई के लिए ऐसी दुआएं करेगा जो उसे उसकी क़ब्र और आखिरत में फायदा देंगीं।

लिहाज़ा बीमार और मैयत के लिए दुआ़ से बेहतर कोई चीज नहीं है।

जब तुम बीमार या मैयत के पास जाओ तो अच्छी बात कहो।

मुसलमान को चाहिए कि वह अपने और अपने मुसलमान भाई के लिए खूबसूरत व मुकम्मल दुआ को चुने जो क़ुरआन और सुन्नत से ली गई हो। और दुआ बीमार की हालत और उसकी जरूरत के मुताबिक और मैयत के मुनासिब होना चाहिए जो कि आखिरत में उसके लिए फायदेमंद हो। बल्कि दुआ में बीमार और मैयत के घर वालों को भी शामिल कर लेना चाहिए कि उनके लिए भी मुनासिब दुआ करें जिससे उन्हें तसल्ली हो और उनका गम दूर हो जाए और भाग्य से खुश रहने में उनकी मदद हो। क्योंकि इससे उन्हें संतुष्टि यानी इत्मीनान और सुकून मिलेगा और मरने वाले के अच्छे अंजाम और उन्हें उसकी मौत पर और सब्र शुक्र करने पर बड़े खुशखबरी मिलेगी।

तुम में से जब कोई शख्स अपनी मस्जिद में (फर्ज़ यानी अनिवार्य) नमाज़ पढ़ ले तो अपनी नमाज़ का कुछ हिस्सा (यानी सुन्नत और नफ्ल) अपने घर में भी अदा करे।

عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللهِ - رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ - أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: "إِذَا قَضَى أَحَدُكُمْ الصَّلَاةَ فِي مَسْجِدِهِ فَلْيَجْعَلْ لِبَيْتِهِ نَصِيبًا مِنْ صَلَاتِهِ؛ فَإِنَّ اللَّهَ جَاعِلٌ فِي بَيْتِهِ مِنْ صَلَاتِهِ خَيْرًا"

तर्जुमा: हज़रत जाबरि बनि अब्दुल्लाह रद़यिल्लाहु अन्हु कहते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "तुम में से जब कोई शख्स अपनी मस्जदि में (फर्ज़ यानी अनविार्य) नमाज़ पढ़ ले तो अपनी नमाज़ का कुछ हस्सि (यानी सुन्नत और नफ्ल) अपने घर में भी अदा करे। क्योंकि अल्लाह तआला उसकी नमाज़ से उसके घर में बेहतरी करेगा।"

तुम में से जब कोई शख़्स अपनी मस्जिद में (फर्ज़ यानी अनिवार्य) नमाज़ पढ़ ले तो अपनी नमाज़ का कुछ हिस्सा (यानी सुन्नत और नफ्ल) अपने घर में भी अदा करे।

नमाज़ धर्म का महत्वपूर्ण सुतून और स्तंभ है। जिसने उसे बाक़ी रखा उसने धर्म का बाक़ी रखा और जिसने उसे ढा दिया उसने धर्म को ढा दिया। यह उन लोगों के लिए साफ़ प्रकाश और रोशन दलील है जिन्होंने इसे विनम्रता और श्रद्धा के साथ उसके नियत समय पर अदा किया। उसमें फ़र्ज़, सुन्नत और मुस्तहब चीज़ों का ख़याल रखा और उसे अपनी आत्मा और जान बना लिया।

नमाज़ बंदे और उस के अल्लाह के बीच एक मज़बूत रिश्ता और संबंध है जिसमें बंदा पूरी तरह से अपनी पूरी बंदगी और अपने अल्लाह के दरबार में अपनी पूरी मोहताजी का इज़हार करता है। नमाज़ जैसी ऐसी कोई इबादत नहीं जिसमें बंदा अपनी कमज़ोरी और मोहताजी का इज़हार कर सके। क्योंकि इसमें वह अपना माथा और अपनी नाक ज़मीन पर रख देता है भले ही समाज में उसकी कुछ भी हैसियत हो, लोगों में कितना ही ऊंचा उसका स्थान हो और कितनी ही वह ताकत का मालिक हो।

उस नमाज़ से मुराद जिसे मुसलमान मस्जिद में पढ़े फर्ज़ और उससे संबंधित उसके बाद और पहले की (सुन्नत और नफ्ल) नमाज़ें हैं। (लिहाज़ा इसका मतलब यह है कि अपने घर दूसरी नफ्ल नमाज़ें पढ़े। और यह भी कहा गया है कि इससे मुराद केवल फर्ज़ नमाज़ है।

तुम में से जब कोई शख़्स अपनी मस्जिद में (फ़र्ज़ यानी अनिवार्य) नमाज़ पढ़ ले तो अपनी नमाज़ का कुछ हिस्सा (यानी सुन्नत और नफ़्ल) अपने घर में भी अदा करे।

जिसका मतलब यह है की सुन्नतें और नफ़्ल नमाज़ें अपने घर पढ़े और फ़र्ज़ नमाज़ें मस्जिद में। और यही ज़्यादा मुनासिब है। लेकिन हाँ अगर घर में सुन्नत और नफ़्ल नमाज़ें पढ़ने से लोग उस पर उंगलियां उठाएं, उसे बुरा समझें और कहें कि यह व्यक्ति सुन्नत है और नफ़्ल नमाज़ें छोड़ता है तो ऐसी सूरत में वह सुन्नत और नफ़्ल नमाज़ें मस्जिद ही में पढ़े ताकि लोग उसके बारे में बुरा गुमान करने से बचें।) और ख़्याल रहे कि जब कोई ऐसे समय के अलावा में मस्जिद में आए जिसमें (नफ़्ल) नमाज़ पढ़ना मना है तो उसे मस्जिद में आने की दो रकात नमाज़ भी पढ़ लेना चाहिए।

याद रहे कि फ़र्ज़ (अनिवार्य) नमाज़ को जमाअ़त के साथ पढ़ना ज़रूरी है। और बिना किसी सख़्त शरई कारण और ज़रूरत के उसे छोड़ना जायज़ नहीं है। बिना किसी कारण के जमाअ़त वही शख़्स छोड़ता है जो मुनाफ़िक़ हो या जिसका इमान कमज़ोर हो।

ह़दीस़ शरीफ में आता है कि जो भी अच्छी तरह वुज करके मस्जिद की तरफ रवाना होता है तो उसके हर कदम के बदले एक नेकी लिखी जाती है। उसका एक दर्जा बढ़ा दिया जाता है। और उसका एक गुनाह मिटा दिया जाता है। और ह़दीस़ की मशहूर किताब सहीह़ मुस्लिम में ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द रद़ियल्लाहु अ़न्हु जमाअ़त की अहमियत बयान करते हुए फरमाते हैं:

तुम में से जब कोई शख़्स अपनी मस्जिद में (फर्ज़ यानी अनिवार्य) नमाज़ पढ़ ले तो अपनी नमाज़ का कुछ हिस्सा (यानी सुन्नत और नफ्ल) अपने घर में भी अदा करे।

"मैंने देखा कि हम लोगों की यह हालत थी कि जिमाअत की नमाज़ से सिर्फ वही मुनाफिक पीछे रहता था जिसका निफ़ाक सबको मालूम होता था। और मैंनें देखा कि (बीमार) आदमी दो आदमियों के सहारे लाया जाता था यहाँ तक कि उसे सफ़ में खड़ा कर दिया जाता।"

घरों में नमाज़ पढ़ने के फायदों में से यह भी है कि रोज़ी-रोटी में बरकत होती है। फरिश्ते नमाज़ के समय वहाँ आते हैं। घर वालों के लिए दुआ करते हैं। और जो कुछ नमाज़ में पढ़ा जाता है उसे सुनते हैं। वे घर अल्लाह के नूर से रोशन होते हैं। अल्लाह के ज़िक्र से आबाद रहते हैं। मस्जिद जैसी उनकी पवित्रता हो जाती है। इनके अलावा और भी दूसरे फायदे हैं जिन्हें हम जानते हैं या नहीं जानते।

लिहाज़ा जो भी नबी ए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इस वसियत पर अमल करेगा तो उसे दुनिया और आखिरत में बड़ी भलाई और बरकत हासिल होगी। वह सच्चा मुसलमान बन जाएगा, मस्जिद का भी हक़ अदा करेगा और घर का भी और घरों को जिंदा करने और उन्हें अल्लाह के ज़िक्र से आबाद करने में अपने घरवालों और पड़ोसियों के लिए एक आदर्श हो जाएगा। और नबी ए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की जिंदगी हम सब के लिए एक बेहतरीन आदर्श है।

ए अल्लाह! मैं परेशानी और गम से तेरी पनाह चाहता हूँ

عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ – رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ – قَالَ : دَخَلَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ذَاتَ يَوْمٍ الْمَسْجِدَ، فَإِذَا هُوَ بِرَجُلٍ مِنَ الْأَنْصَارِ يُقَالُ لَهُ: أَبُو أُمَامَةَ، فَقَالَ: "يَا أَبَا أُمَامَةَ، مَا لِي أَرَاكَ جَالِسًا فِي الْمَسْجِدِ فِي غَيْرِ وَقْتِ الصَّلَاةِ

قَالَ: هُمُومٌ لَزِمَتْنِي وَدُيُونٌ يَا رَسُولَ اللَّهِ، قَالَ: "أَفَلَا أُعَلِّمُكَ كَلَامًا إِذَا أَنْتَ قُلْتَهُ أَذْهَبَ اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ هَمَّكَ وَقَضَى عَنْكَ دَيْنَكَ؟

قَالَ: قُلْتُ: بَلَى يَا رَسُولَ اللَّهِ، قَالَ: "قُلْ إِذَا أَصْبَحْتَ وَإِذَا أَمْسَيْتَ: اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنَ الْهَمِّ وَالْحَزَنِ، وَأَعُوذُ بِكَ مِنَ الْعَجْزِ وَالْكَسَلِ، وَأَعُوذُ بِكَ مِنَ الْجُبْنِ وَالْبُخْلِ، وَأَعُوذُ بِكَ مِنْ غَلَبَةِ الدَّيْنِ وَقَهْرِ الرِّجَالِ"، قَالَ: فَفَعَلْتُ ذَلِكَ فَأَذْهَبَ اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ هَمِّي وَقَضَى عَنِّي دَيْنِي

ए अल्लाह! मैं परेशानी और गम से तेरी पनाह चाहता हूँ

तर्जुमा: ह़ज़रत अबू सई़द खुदरी बयान करते हैं कि एक दिन अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम मस्जिद में तशरीफ लाए तो क्या देखते हैं कि वहाँ एक अंसारी आदमी हैं जिनका नाम अबू उमामह था। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि ने फ़रमाया: "ए अबू उमामह! क्या बात है कि मैं तुम्हें मस्जिद में देख रहा हूँ और नमाज़ का समय भी नहीं है?" उन्होंने कहा: "ए अल्लाह के रसूल! मुझे गमों और कर्ज़ों ने घेर लिया है।" तो आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने उनसे फ़रमाया: " क्या मैं तुम्हें ऐसे शब्द ना सिखा दूँ जिन्हें अगर तुम पढ़ो तो अल्लाह ताआला तुम्हारे गम दूर कर दे और तुम्हारे क़र्ज़े अदा कर दे?" ह़ज़रत अबू उमामह कहते हैं कि मैंने कहा: "क्यों नहीं ए अल्लाह के रसूल!" तो आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: "सुबह-शाम ये शब्द पढ़ा करो:

اللهُمَّ إنِّي أعُوذُ بِكَ مِنَ الْهَمِّ وَالْحَزَنِ، وَأَعُوذُ بِكَ مِنَ الْعَجْزِ وَالْكَسَلِ، وَأَعُوذُ بِكَ مِنَ الْجُبْنِ وَالْبُخْلِ، وَأَعُوذُ بِكَ مِنْ غَلَبَةِ الدَّيْنِ وَقَهْرِ الرِّجَالِ

(अल्लाहुम्मा इन्नी अऊ़ज़ु बिका मिन अल-हम्मि व अल- हुज़्नि व अऊ़ज़ु बिका मिन अल- अ़ज्ज़ी व अल-कस्लि व अऊ़ज़ु बिका मिन अल-जुब्नि व अल-बुख़्लि व अऊ़ज़ु बिका मिन ग़लबत अल- दैनि व क़हरि अल-रिजाली)

ए अल्लाह! मैं परेशानी और गम से तेरी पनाह चाहता हूँ

यानी ए अल्लाह! मैं तेरी पनाह चाहता हूँ परेशानी और गम से, और तेरी शरण चाहता हूँ अक्षमता और सुस्ती से। और तेरी पना चाहता हूँ कायरता और कंजूसी से। और तेरी पनाह चाहता हूँ क़र्ज़ों और ज़ालिमों के (मेरे ऊपर) कब्ज़े से। अबू उमामह बयान करते हैं कि जब मैंनें यह दुआ की तो अल्लाह अल्लाह ने मेरी परेशानियाँ दूर कर दीं और मेरे क़र्ज़े से भी अदा दिए।"

यानी ए अल्लाह पाक! मैं तुझ ही पर भरोसा रखता हूँ। चिंता और गम की बुराई से तेरी ही महानता की शरण में आता हूँ। और तेरी सुरक्षा के ज़रिए उनसे सुरक्षा चाहता हूँ। और तुझसे यह मांगता हूँ कि तू अपनी कुदरत के ज़रिए चिंता और गम और उनके कारणों को मेरे दिल से दूर कर दे और मेरे सीने को ईमान की रोशनी से भर दे ताकि शैतान अपने वसवसों और संदेहों से मुझे गम में ना डाले और अपनी नापाक कोशिशों से मेरे ईमान को खराब ना कर दे। और ए अल्लाह! इसके अलावा हर वह चीज मांगता हूँ जो तेरे फैसले और भाग्य से राज़ी और संतुष्ट रहने में मेरी मदद करे।

नबी ए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के प्यारे सहाबा ए करिम रदियल्लाहु अन्हुम मस्जिदों और घरों में तन्हाई पसंद करते थे ताकि वे अपने खाली के समय में अल्लाह को याद करें,

ए अल्लाह! मैं परेशानी और गम से तेरी पनाह चाहता हूँ

दुआएं करें और अल्लाह की मखलूक़ में गोर व फिक्र करें। उनमें से जब किसी को कोई गम होता तो नबी ए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सुन्नत पर अमल करते हुए नमाज़ की तरफ दौड़ते। क्योंकि बंदा अपने रब से सबसे ज़्यादा नज़दीक सजदे की हालत में होता है।

नबी ए करीम सल्लल्लाहु अलैहि विसल्लम ने इस ह़दीस़ शरीफ में दुआ़ को कलाम यानी बात कहा। इससे इस तरफ इशारा है कि दुआ़ दिल की गहराइयों से होना चाहिए और इस यक़ीन के साथ हो कि दुआ़ कबूल होगी। गोया दुआ़ करने वाले को ऐसा लगना चाहिए कि वह अपने दिल, ज़ुबान बल्कि अपने पूरे तन मन समीत अपने अल्लाह से बात कर रहा है।

हम यहाँ अरबी भाषा के तीन शब्द यानी " अल-हम्म, अल- हुज़्न और अल-गम्म" में फर्क बयान करना चाहते हैं जो निम्नलिखित है।

“अल-हम्म” यह आने वाले मामले या खतरे से संबंध रखता है यानी अगर कोई ऐसा मुश्किल मामला होने वाला हो जिसके करने या ना करने से इंसान को कोई गम और दुख हो तो उसे अरबी भाषा में " अल-हम्म" कहते हैं। यानी आने वाली मुसीबत के खतरे की चिंता को "अल-हम्म" कहा जाता है।

ए अल्लाह! मैं परेशानी और गम से तेरी पनाह चाहता हूँ

"अल-हुज़्न" गुजरे हुए ना पसंदीदा मामले पर इंसान के दिल में जो दुख और गम होता है उसे अरबी भाषा में अल "अल-हुज़्न" कहते हैं जैसे कि किसी दोस्त या रिश्तेदार की मौत हो जाने का गम और दुख या कुछ क़ीमती चीज़ या कुछ पैसे खो जाने का गम और दुख। लिहाज़ा यह गुजरे हुए मामले में सोचने से पैदा होता है। "अल-गम्म" उस मुसीबत को कहते हैं जो इंसान पर कई कारणों से आती है। लिहाज़ा उसकी वजह से इंसान पर हम्म और हुज़्न दोनों जमा हो जाते हैं और फिर उनसे निकलने का उसे कोई रास्ता समझ नहीं आता है।

मैं अल्लाह के मुकम्मल (सम्पूर्ण) शब्दों की पनाह में आता हूँ।

عَـنْ مَالِـك عَـنْ يَحْيَـى بْـن سَـعِيد- رَضِيَ اللَّـهُ عَنْـهُ - قَـالَ: بَلَغَنِـي أَنَّ خَالِـدَ بْـنَ الْوَلِيـدِ - رَضِيَ اللَّـهُ عَنْـهُ - قَـالَ لِرَسُـولِ اللَّـهِ صَلَّى اللَّـهُ عَلَيْـهِ وَسَـلَّمَ: إِنِّي أُرَوَّعُ فِي مَنَامِي فَقَالَ لَهُ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ:

قُـلْ أَعُـوذُ بِكَلِـمَاتِ اللَّـهِ التَّامَّـةِ مِـنْ غَضَبِـهِ وَعِقَابِـهِ وَشَرِّ عِبَـادِهِ، وَمِـنْ هَمَـزَاتِ" الشَّيَاطِينِ وَأَنْ يَحْضُرُونِ

तर्जुमा: हज़रत मालिक कहते हैं कि यहया बिन सईद ने कहा कि मुझे यह खबर पहुंची की हज़रत खालिद बिन वलीद रदियल्लाहु अन्हु ने रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से कहा कि मैं नींद में डर जाता हूँ। तो उनसे रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: "तुम यह पढ़ा करो

मैं अल्लाह के मुकम्मल (सम्पूर्ण) शब्दों की पनाह में आता हूँ।

أَعُوذُ بِكَلِمَاتِ اللهِ التامةِ مِنْ غَضَبِهِ وَعِقَابِهِ وَشَرِ عِبَادِهِ، وَمِنْ هَمَزَاتِ الشيَاطِينِ وَأَنْ يَحْضُرونِ

(अऊज़ु बिकलिमाति अल्लाही अल- ताम्माति मिन ग़दबिहि व इक़ाबिहि व शर्रि इबादिहि व मिन हमज़ाति अल- शयातीनि व अन यह़द़ुरुनी)

यानी मैं अल्लाह के गुस्से, उसकी सज़ा, उसके बंदों की बुराई, शैतानी वसवसों और उनके मेरे पास आने से अल्लाह के मुकम्मल (सम्पूरण) शब्दों की पनाह में आता हूँ।"

अल्लाह के मुकम्मल (सम्पूरण) शब्द वह शब्द हैं जिनमें किसी प्रकार की न कोई कमी हो और न कोई ऐब़ हो जैसा के इमाम नववी ने कहा है।

और यह भी कहा गया है कि सम्पूरण शब्दों का मतलब लाभदायक और बीमारी ठीक करने वाले शब्द। यह भी कहा गया है इन शब्दों से मुराद क़ुरआन मजीद है।

यह भी कहा गया है कि इन शब्दों से मुराद अल्लाह के नाम और उसकी विशषताएं हैं। और यह भी कहा गया है कि इन शब्दों से मुराद वे तमाम चीज़ें हैं जो अल्लाह ने अपने अंबिया ए किराम पर उतारी।

मैं अल्लाह के मुकम्मल (सम्पूर्ण) शब्दों की पनाह में आता हूँ।

लेकिन मेरे नजदीक सबसे अच्छी राय -और अल्लाह ही सबसे ज़्यादा जानता है - यह है कि इन मुकम्मल (सम्पूरण) शब्दों से मुराद: "सुबहानल्लह (यानी अल्लाह पाक है।),व अल्हम्दुलिल्लाह (और सभी तारीफें अल्लाह हि के लिए हैं।) व ला इलाहा इल्लल्लाहु (यानी अल्लाह के अलावा कोई इबादत के लायक नहीं) व अल्लाहु अकबर (यानी और अल्लाह सबसे बड़ा है।)" ।हैं। क्योंकि इनमें से हर एक शब्द शुद्ध तौहीद, पूरी पाकी और सबसे महान सौंदर्य और पूरणता को दर्शाता है।

और शैतानी हमज़ात का मतलब है शैतान के वसवसे हम्ज़ अस्ल में अरबी भाषा का शब्द है और उसके मानें है: दबाना, निचोड़ना, धक्का देना और दूर करना। क्योंकि शैतान इंसान पर दबाव डालता है, उसके दिल को चिंता और गम से भर देता है, उसे बुराई की तरफ ढकेलता है और नेकी से दूर कर देता है करता है सीधे रास्ते से रोकता है। तथा मौत के समय उसके पास आता है ताकि उसे उसके धर्म से फैर दे और कलमा ए तौहीद यानी ला इलाहा इल्लल्लाह कहने से रोक दे। यही वजह है कि अल्लाह ने अपने नबी ए करीम सल्लल्लाहु अलैहि विसल्लम को यह आदेश दिया कि वह शैतानी हमज़ात यानी वसवसों से अपने अल्लाह की पनाह मांगे।

मैं अल्लाह के मुकम्मल (सम्पूर्ण) शब्दों की पनाह में आता हूँ।

इस ह़दीस़ पाक से हमें यह सबक मलिता है कि जिब बंदा अल्लाह की बारगाह में दुआ़ करे तो अपने गुनाहों को याद करे अपने रब के ह़क में अपनी कोताहियों को याद करे। और दीन और दुनयिा की कोई चीज़ मांगने से पहले यह दुआ़ करे कि अल्लाह उसे अपने गुस्से और अ़ज़ाब से सुरक्षति रखे भले ही दलि ही दलि में ऐसा करे। क्योंकि गुनाह का इकरार और उसकी सज़ा का डर इस दुआ करने वाले के लिए अधकि रास्ता खोल देगा और कोताही के बावजूद भी उसकी दुआ कबूल हो जाएगी इंशाअ अल्लाह।

हुकूमत मत मांगो।

عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ سَمُرَةَ - رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ - قَالَ: قَالَ لِي رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "يَا عَبْدَ الرَّحْمَنِ بْنَ سَمُرَةَ، لَا تَسْأَلِ الْإِمَارَةَ فَإِنَّكَ إِنْ أُعْطِيتَهَا عَنْ مَسْأَلَةٍ وُكِلْتَ إِلَيْهَا وَإِنْ أُعْطِيتَهَا عَنْ غَيْرِ مَسْأَلَةٍ أُعِنْتَ عَلَيْهَا، وَإِذَا حَلَفْتَ عَلَى يَمِينٍ فَرَأَيْتَ غَيْرَهَا خَيْرًا مِنْهَا فَكَفِّرْ عَنْ يَمِينِكَ، وَائْتِ الَّذِي هُوَ خَيْرٌ"

तर्जुमा: हज़रत अ़ब्दुर्रहमान बिन समुरह कहते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने मुझसे फ़रमाया: "ए अ़ब्दुर्रहमान बिन समुरह! हुकूमत मत मांगना। क्योंकि अगर यह तुम्हें मांगने पर मिली तो तुम इस के हवाले कर दिए जाओगे (यानी इस के सिलसिले में अल्लाह की तरफ से मदद ना होगी) लेकिन अगर बिना मांगे तुम्हें यह दी गई तो इसमें तुम्हारी मदद की जाएगी। और अगर तुम किसी बात पर क़सम खा लो और फिर उसके अलावा दूसरी चीज़ में भलाई देखो तो अपनी कसम तोड़ कर उसका कफ्फारा अदा कर दो और वह करो जिसमें भलाई हो।"

हुकूमत मत मांगो।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि विसल्लम के कहने "हुकूमत मत मांगना" का मतलब है कि इसकी ख्वाहिश ना करो और ना ही उसे हासिल करने की कभी भी कोशिश करो। क्योंकि हुकूमत ऐसी अमानत है जिसका बोझ कमज़ोर लोग नहीं उठा सकते और ना ही उसके अधिकार अदा कर सकते हैं। बादशाह इंसाफ और न्याय स्थापित करने में कितनी ही कोशिश कर ले लेकिन उससे ऐसे काम जरूर हो जाएंगे जिनके बारे में क़यामत के दिन उससे पूछताछ होगी। लिहाज़ा हुकूमत अक्सर एक तकलीफ होती है इनाम और तोहफा नहीं जैसा कि कुछ लोग समझते हैं।

और हुकूमत मांगने से मना करने यह पता नहीं चलता है कि इसे मांगना हराम व नाजायज़ है। बल्कि यह मना करना तो एक नसीहत और रहनुमाई है। लिहाज़ा हुकूमत मांगना मकरूह (ना पसंदीदा) होगा हराम और नाजायज़ नहीं। हाँ अगर कोई ऐसा व्यक्ति मागें जो उसके लायक नहीं हो, या उसे अधिक संभावना हो कि वह उसके बोझ बर्दाश्त नहीं कर सकेगा और सही तौर पर उसकी जिम्मेदारियों को नहीं निभा पाएगा, या उसका हुकूमत की आड़ में केवल दुनिया के फायदे को हासिल करने का इरादा हो तो ऐसी सूरत में हुकूमत मांगना हराम है।

हुकूमत मत मांगो।

इसमें कोई शक नहीं कि हुकूमत मांगना इसका कारण है कि लोग उस मांगने वाले के बारे में शक व संदेह करेंगें हैं और उसके बारे में बुरा समझेंगे। लिहाज़ा मौजूदा बादशाह को चाहिए कि वह शक और संदेह को दूर करने के लिए उस मांगने वाले के अलावा किसी अन्य व्यक्ति को वाली बनाए।

नबी ए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि विसल्लम कभी किसी ऐसे शख्स को हाकिम नहीं बनाते जो खुद से हुकूमत मांगता।

सच को मज़बूती से पकड़ो।

عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بن مسعود أَنَّ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: "عَلَيْكُمْ بالصِّدْقِ فَإِنَّ الصِّدْقَ يَهْدِي إِلَى الْبِرِّ، وَإِنَّ الْبِرَّ يَهْدِي إِلَى الْجَنَّةِ، وَمَا يَزَالُ الرَّجُلُ يَصْدُقُ وَيَتَحَرَّى الصِّدْقَ حَتَّى يُكْتَبَ عِنْدَ اللَّهِ صِدِّيقًا، وَإِيَّاكُمْ وَالْكَذِبَ؛ فَإِنَّ الْكَذِبَ يَهْدِي إِلَى الْفُجُورِ، وَإِنَّ الْفُجُورَ يَهْدِي إِلَى النَّارِ، وَمَا يَزَالُ الرَّجُلُ يَكْذِبُ وَيَتَحَرَّى الْكَذِبَ حَتَّى يُكْتَبَ عِنْدَ اللَّهِ كَذَّابًا

तर्जुमा: हज़रत अब्दुल्लह बिन मसऊद रदियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "सच को मज़बूती से पकड़ो। क्योंकि सच नेकी और अच्छाई की तरफ ले जाता है और नेकी जन्नत की तरफ ले जाती है। आदमी सच बोलता रहता है और सच की तलाश में रहता है यहाँ तक की वह अल्लाह के यहाँ बहुत ज्यादा सच्चा लिख दिया जाता है।

सच को मज़बूती से पकड़ो।

और हमेशा झूठ से बचो। क्योंकि झूठ फिस्क़ और फ़ुजूर (यानी बुराई और गुनाह) की तरफ ले जाता है फिस्क़ और फ़ुजूर जहन्नम की तरफ ले जाता है। और आदमी झूठ बोलता है और झूठ की तलाश में रहता है यहाँ तक कि वह अल्लाह के यहाँ बहुत ज़्यादा झूठा लिख दिया जाता है।"

नबी ए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की यह वसीयत तमाम प्रकार की भालाईयों को अपने अन्दर लिए हुए है जिसे मुसलमान अपने दिल से कुबूल करता है और अपने दिमाग, सोच और फिक्र में बिठा लेता है जिससे उसके दिलो-दिमाग और ज़मीर को सुकून मिलता है। क्योंकि सच से बढ़कर कोई चीज़ नहीं है। सच ईमान की बेहतरीन और बुलंद और अच्छी सूरत है।

जब सच ही ईमान है और इमान ही सच है तो फिर ईमान की हर शाख और विशेषता का शीर्ष, संदर्भ और मुख सच हि होगा।

लिहाज़ा अमानत सच है, वफा सच है, सब्र सच है, शुक्र सच है इनके अलावा भी ईमान की सभी शाखाओं और विशेषताओं का शीर्ष और संदर्भ सच ही है।

सच को मज़बूती से पकड़ो।

इस बयान और स्पष्टता के बाद इस वसीयत की अहमियत और मुसलमानों के दिलों में इसकी महानता और सम्मान का पता चलता है और खास तौर पर जब वे विद्वान और बुद्धिमान हों।

यह वसियत उन सभी तरबियिती तरीकों को शामिल है जो जिंदा व महान और अच्छे दिलों और ज़मीरों में तमाम इंसानी खूबियों व गुणों और अच्छे और ऊंचे अखलाक के दिये रोशन करते हैं।

नबी ए करीम सल्लल्लाहु अलैहि सल्लम के फरमान "सच को मज़बूती से पकड़ो" बहुत ही शानदार तरीक़े में है जिसे भाषा के माहिर लोग भावनाओं को उभारने और होसले का मज़बूत करने वाला तरीक़ा कहते हैं। ताकि सुनने वाला उस चीज़ के करने में जल्दी करे और मौके का फायदा उठाते हुए उसकी भलाईयों को हासिल करे।

इस ह़दीस़ पाक का मतलब यह है कि हमेशा सच बोलो, उसे उसकी जगहों में तलाश करो, सच की मोहब्बत को अपनी रग-रग में बसा लो, और अपने अल्लाह के और अपने आप और तमाम लोगों के साथ अपने कामों और सभी हालतों में सच को मज़बूती से पकड़े रहो। और सच बोलने से कभी पीछे मत हटो अगर भले ही तुम्हारे सरों पर तलवारें ही क्यों ना तान ली जाएं। क्योंकि सच में ही बचाव है।

सच को मज़बूती से पकड़ो।

सरि्फ सख्त ज़रूरत के समय ही तौरीया (अपने बचाओ के लिए ऐसी बात कहना जसिके दो माना हों और सुनने वाला कुछ और समझे और आपका मकसद दुसरा हो।) का सहारा लो। सच को ही अपना धर्म और मज़हब बना लो। क्योंकि सच में ही तुम्हारे मामले की भलाई है और उसी में तुम्हारे लिए धर्म और दुनिया की बेहतरी है। वह तुम्हारे ईमान के सही होने, तुम्हारे दलिों के सलामत होने और तुम्हारा अल्लाह पर पूरा भरोसा होने की दलील है। अगर मुसलमान हर समय अपने अल्लाह के और अपने आप और लोगों के साथ सच से काम लेता रहे और हमेशा सच के दामन को ही पकड़े रहे तो शायद ही कभी वह जानबूझकर कोई गुनाह करे।

इसमें कोई शक नहीं कि नेकी इंसान को उतना ही जन्नत की तरफ ले जाती है जतिना वह उसकी पाबंदी करता है।

मैंने ज़ुल्म को अपने ऊपर ह़राम क़रार दिया है।

عَـنْ أَبِي ذَرٍّ- رَضِيَ اللَّـهُ عَنْـهُ - عَـنْ النَّبِـيِّ صَـلَّى اللَّـهُ عَلَيْـهِ وَسَـلَّمَ فِيـمَا رَوَى عَـنْ اللَّـهِ تَبَارَكَ وَتَعَالَى أَنَّهُ قَالَ:

"يَا عِبَادِي! إنِّي حَرَّمْتُ الظُّلْمَ عَلَى نَفْسِي وَجَعَلْتُه بَيْنَكُمْ مُحَرَّمًا فَلَا تَظَالَمُوا.

يَا عِبَادِي! كُلُّكُمْ ضَالٌّ إلَّا مَنْ هَدَيْته فَاسْتَهْدُونِي أَهْدِكُمْ.

يَا عِبَادِي! كُلُّكُمْ جَائِعٌ إلَّا مَنْ أَطْعَمْته فَاسْتَطْعِمُونِي أُطْعِمْكُمْ.

يَا عِبَادِي! كُلُّكُمْ عَارٍ إلَّا مَنْ كَسَوْته فَاسْتَكْسُونِي أَكْسُكُمْ.

يَـا عِبَـادِي! إنَّكُـمْ تُخْطِئُـونَ بِاللَّيْـلِ وَالنَّهَـارِ وَأَنَـا أَغْفِـرُ الذُّنُـوبَ جَمِيعًـا فَاسْـتَغْفِرُونِي أَغْفِرْ لَكُمْ.

يَا عِبَادِي! إنَّكُمْ لَنْ تَبْلُغُوا ضَرِّي فَتَضُرُّونِي وَلَنْ تَبْلُغُوا نَفْعِي فَتَنْفَعُونِي.

يَـا عِبَـادِي! لَـوْ أَنَّ أَوَّلَكُـمْ وَآخِرَكُـمْ وَإِنْسَـكُمْ وَجِنَّكُـمْ كَانُـوا عَـلَى أَتْقَـى قَلْـبِ رَجُـلٍ وَاحِدٍ مِنْكُمْ مَا زَادَ ذَلِكَ فِي مُلْكِي شَيْئًا.

मैंने ज़ुल्म को अपने ऊपर ह़राम क़रार दिया है।

يَا عِبَادِي! لَوْ أَنَّ أَوَّلَكُمْ وَآخِرَكُمْ وَإِنْسَكُمْ وَجِنَّكُمْ كَانُوا عَلَى أَفْجَرِ قَلْبِ رَجُلٍ وَاحِدٍ مَا نَقَصَ ذَلِكَ مِنْ مُلْكِي شَيْئًا.

يَا عِبَادِي! لَوْ أَنَّ أَوَّلَكُمْ وَآخِرَكُمْ وَإِنْسَكُمْ وَجِنَّكُمْ قَامُوا فِي صَعِيدٍ وَاحِدٍ فَسَأَلُونِي فَأَعْطَيْتُ كُلَّ إِنْسَانٍ مَسْأَلَتَهُ مَا نَقَصَ ذَلِكَ مِمَّا عِنْدِي إِلَّا كَمَا يَنْقُصُ الْمِخْيَطُ إِذَا أُدْخِلَ الْبَحْرَ.

तर्जुमा: ह़ज़रत अबू ज़र रद़यिल्लाहु अ़न्हू कहते हैं कि अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि विसल्लम ने उन ह़दीस़ों में बयान फरमाया जो आप अपने अल्लाह से बयान करते हैं (यानी ह़दीस़ क़ुदसी में) कि अल्लाह तआ़ला ने इरशाद फ़रमाया:

" ए मेरे बंदो! मैंने ज़ुल्म को अपने ऊपर ह़राम क़रार दिया है। (यानी मैं ज़ुल्म से पाक हूँ।) और तुम पर भी उसे ह़राम किया है। तो तुम आपस में एक दूसरे पर ज़ुल्म मत करो।

ए मेरे बंदो! तुम सब बहके हुए हो सिवाए उस शख्स के जिसको मैं हिदायत दूँ। तो तुम मुझसे हिदायत मांगो मैं तुम्हें हिदायत दूंगा।

ए मेरे बंदो! तुम सब भूखे हो सिवाय उसके जिसे मैं खिलाऊं तो तुम मुझसे खाना मांगो मैं तुम्हें खाना खिलाऊंगा।

मैंने ज़ुल्म को अपने ऊपर ह़राम क़रार दिया है।

ए मेरे बंदो! तुम सब नंगे हो (यानी बदन छुपाने के लिए कपड़े के मोहताज हो) सिवाय उसके जिसे मैं पहनाऊं तो तुम मुझसे कपड़े मांगू मैं तुम्हें दूंगा।

ए मेरे बंदो! तुम दिन रात गलतियाँ करते हो और मैं तुम्हारी गलतियों को माफ करता हूँ। तो तुम मुझसे माफी मांगो मैं तुम्हें माफ कर दूँगा।

ए मेरे बंदो! तुम मेरा नुकसान नहीं कर सकते और ना ही मुझे कोई फायदा पहुंचा सकते हो।

ए मेरे बंदो! अगर तुम्हारे अगले और पिछले और आदमी और जिन सब ऐसे हो जाएं जैसे तुम में सबसे बड़ा परहेज़ गार शख्स तो उससे मेरी हुकूमत में कुछ ज़्यादती ना होगी। और अगर तुम्हारे अगले और पिछले लोग और इंसान और जिन सब ऐसे हो जाएं जैसे तुम में सबसे बड़ा बदकार (गुनाहगार) शख्स तो उससे मेरी हुकूमत में कुछ नुकसान ना पहुंचेगा।

ए मेरे बंदो! अगर तुम्हारे अगले और पिछले (सभी लोग) और इंसान और जिन सब एक मैदान में खड़े हों जाएँ और फिर मुझसे मांगना शुरू करें और मैं हर एक को जो वह मांगे दे दूँ तब भी मेरे पास जो कुछ है वह कम ना होगा मगर इतना जैसे समुद्र में सूई डाल कर निकालो

मैंने ज़ुल्म को अपने ऊपर ह़राम क़रार दिया है।

(समुन्द्र में सूई डालकर नकिालने उसके के पानी में जतिनी कमी आती है उतनी भी अल्लाह के खजाने में कमी न आएगी। क्योंकि उसके खज़ाने की कोई सीमा नहीं है। और यह सूई से तो समझाने के लिए उदाहरण दयिा गया है।)

ए मेरे बंदो! यह तो तुम्हारे ही काम है जनिको मैं तुम्हारे लिए गनिता हूँ। फरि तुम्हें इन कामों का पूरा बदला दूंगा। तो जो व्यक्ति बेहतर बदला पाए तो चाहिए कि अल्लाह का शुक्र अदा करे (कि उसकी कमाई बेकार ना गई) और जो बुरा बदला पाए तो अपने आप को मलामत करे। (कि उसने जैसा कयिा वैसा पाया।)"